

# Visit of School Students at CSIR- CBRI under Jigyasa 2.0 and Janjatiya Gaurav Varsh Lecture on 11<sup>th</sup> December, 2024

## सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने जिज्ञासा 2.0 के तहत एक छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का किया आयोजन

रुड़की (दैनिक जागरूक): सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने जिज्ञासा 2.0 के तहत एक छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में छात्रों को प्रयोग, सिमुलेशन, वीडियो और अन्य मीडिया के माध्यम से विज्ञान के अवसर प्रदान किए गए। कार्यक्रम में 102 छात्रों और 10 शिक्षकों का सहभाग्य रखा गया।

कार्यक्रम के दौरान, छात्रों ने प्रदर्शनी गैलरी का दौरा किया, जहाँ वैज्ञानिकों और स्टाफ समन्यकों ने उन्हें विभिन्न विषयों पर गहन जानकारी प्रदान की। श्री नदीम अहमद ने सीएसआईआर-सीबीआरआई की स्थापना और योगदान पर एक आकर्षक प्रस्तुति दी, जिसमें भवन विज्ञान, वास्तुकला और योजना, ऊर्जा दक्षता, और अधिक सहित इसके विविध अनुसंधान एवं विकास प्रयासों और प्रभागों पर प्रकाश डाला गया।



## Roorkee: सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन

Manoj kumar • 12 hours ago • 82 • 1 minute read



**रुड़की:** सीएसआईआर-सीबीआरआई ने जिज्ञासा 2.0 के तहत एक छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में राजकीय इंटर कॉलेज, बीएचईएल, हरिद्वार के लगभग 102 छात्रों और 10 शिक्षकों ने सक्रिय भागीदारी की। प्रतिभागियों का स्वागत मुख्य वैज्ञानिक और ओडीएसओ के प्रमुख नदीम अहमद ने वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. चंदन स्वरूप मीना, डॉ. हेमलता और डॉ. ताबिश आलम के साथ किया।

कार्यक्रम के दौरान, छात्रों ने प्रदर्शनी गैलरी का दौरा किया, जहाँ वैज्ञानिकों और स्टाफ समन्यकों ने उन्हें विभिन्न विषयों पर गहन जानकारी प्रदान की। श्री नदीम अहमद ने सीएसआईआर-सीबीआरआई की स्थापना और योगदान पर एक आकर्षक प्रस्तुति दी, जिसमें भवन विज्ञान, वास्तुकला और योजना, ऊर्जा दक्षता, और अधिक सहित इसके विविध अनुसंधान एवं विकास प्रयासों और प्रभागों पर प्रकाश डाला गया।

### Related Articles

**Uttarakhand में राष्ट्रीय खेलों के लिए तैयारियां जोरों पर, 31 करोड़ की लागत से बने स्पोर्ट्स रेंज में खिवाड़ियों की प्रेक्टिस शुरू**

18 hours ago

**Dehradun: उत्तराखंड सरकार की कैबिनेट बैठक हुई खराब, 30 प्रस्तावों में लगी कैबिनेट की गुरुर, ऊर्जा विभाग को लेकर बड़ा फैसला**

18 hours ago



Roorkee: सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन - Nazariya...  
रुड़की: सीएसआईआर-सीबीआरआई ने जिज्ञासा 2.0 के तहत एक छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया।  
www.nazariyanews.com

NAZARIYA NEWS

Roorkee: सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन

देखें पूरी खबर। इस लिंक पर क्लिक करें।  
<https://www.nazariyanews.com/16222/>

फेसबुक पर जुड़ें -  
FOLLOW US  
<https://www.facebook.com/nazariyanewsindia/>

व्हाट्सऐप ग्रुप पर जुड़ें -  
<https://chat.whatsapp.com/IIQCIG3B1X93PDYV6jRff>

खबर एवं विज्ञान के लिए संपर्क करें....  
9368932200, 9927328326

08:22

उन्होंने सीबीआरआई में जनजातीय गौरव वर्ष 2024-2025 समारोह के बारे में बहुमूल्य जानकारी भी साझा की, तथा बिरसा मुंडा जैसे आदिवासी नायकों के महत्वपूर्ण योगदान पर जोर दिया। इस यात्रा का सम्मानन शिक्षकों और छात्रों द्वारा हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने प्रेरणादायक और शैक्षिक अनुभव के लिए अपना आभार व्यक्त किया।

# Brainstorming "Climate Change Impacts on Mountain Hazards with Special Reference to Rock Ice Avalanches, Debris & GLOF" (CCMH) on 27 Nov 2024 at IHC New Delhi

8 हरिद्वार: दैनिक हाक, बृहस्पतिवार, 28 नवम्बर 2024

रुड़की

## सीएसआईआर-सीबीआरआई ने एक दिवसीय विचार-मंथन कार्यशाला का किया आयोजन

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है

रुड़की (दैनिक हाक): सीएसआईआर-सीबीआरआई ने भारतीय पर्वतारोहण केंद्र, नई दिल्ली में 'हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना' के प्रस्तावों

के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर चर्चा करे हुए हैं। इस विचार-मंथन कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।



कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

## CSIR-CBRI, Roorkee Organised A One-Day Brainstorming Workshop



Roorkee (The Hawk): CSIR-CBRI, Roorkee organised a one-day brainstorming workshop on "Towards Developing a National Plan for Climate Change Impacts on Avalanches, GLOFs and Landslides" at Indian Habitat Centre, New Delhi on 27th November 2024. The aim of this workshop is to address the emerging issues of avalanches, GLOFs and landslides in the Indian Himalayas. The workshop is intended to address the proposal and initiative of CSIR-CBRI in order to draw attention to the need for increased funding for research and development, capacity building, specialized organizations and institutes on mountain hazards, and international collaboration to address such emerging issues. The brainstorming workshop has been inaugurated in the presence of the Chief

guest, Dr. M. Ravichandran (Secretary, MoES, Govt. of India), Guest of Honor, Dr. R.K. Bhandari (Former Director, CSIR-CBRI, Roorkee), Prof. R. Pradeep Kumar (Director, CSIR-CBRI, Roorkee), At. S.K. Negi (Chair, organizing committee) and Dr. D.P. Kanungo (Co-Chair, organizing committee). Prof. R. Pradeep Kumar (Director, CSIR-CBRI, Roorkee), during his inaugural address emphasized the importance and necessity of preparing a national plan for climate change induced mountain hazards in the country. If such plans are not formulated now, in future the disaster induced GDP loss can reach up to 15% from 8% by 2047. Dr. D.P. Kanungo, Chief Scientist and co-organizing committee member, today event emphasized the potential application of InSAR technology for monitoring and modelling

mountain hazards. He also presented the emerging efforts of CSIR-CBRI with a special emphasis on a national level plan for GLOF and debris flow. The guest of honour Dr. R. K. Bhandari (former Director CSIR-CBRI) has mainly focused on multi-hazard assessment and domino effect based approaches for effective disaster risk reduction. He has also discussed the potentiality of Big Data, AI and ML for data-informed decision making under the climate change scenario. Dr. M. Ravichandran, Chief Guest (Secretary, MoES, Govt. of India) particularly focused on speculative approaches for better understanding and prediction of such mountain hazards. He has also emphasized the ongoing work in scientific research and administration staff members of CSIR-CBRI, Roorkee are presenting their brainstorming workshop.

encourages for considering holistic approach to deal with such hazards and establish collaboration with National and International agencies for effective disaster control. He recommended the following to the gathering for better risk management, including monitoring and early warning, hazard zonation, application of Radar technology, engineering solutions for vulnerable slopes, ecological and environmental management, engage local community and social education, policy making, and finally research and innovation. At. S.K. Negi (Chief Scientist and Chair, organising committee) gave the vote of thanks after the inaugural session. Dr. Rajesh Kumar Dash was the organising secretary of this event. The workshop conducted successfully in 4 technical sessions, including Monitor and Measure, Quantity and Forecast, Mitigate and Prepare, and a panel discussion towards developing a National Plan with national and international experts working in this domain. Prof. R. Pradeep Kumar moderated the Panel discussion after the session. More than 80 delegates and experts representing organisations/institutions across the country along with scientific and administrative staff members of CSIR-CBRI, Roorkee are present in this brainstorming workshop.

# एक दिवसीय विचार-मंथन कार्यशाला आयोजित

रुड़की बट्टी विशाल: सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की ने बुधवार को भारतीय पर्वतारोहण केंद्र, नई दिल्ली में 'हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना' के प्रस्तावों के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर चर्चा करे हुए हैं। इस विचार-मंथन कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।



कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

## पर्वतीय खतरों की बेहतर समझ पर ध्यान केंद्रित किया

जलवायु परिवर्तन, रुड़की

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।



कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।



## छात्र-छात्राओं ने किया सीबीआरआई का शैक्षिक भ्रमण

अखंडता, चरित्र और नैतिकता, अच्छे इंसान के रूप में परिभाषित करते हैं: प्रो. प्रदीप कुमार

**रुड़की बड़ी विशाल।** मुद्रकमण्डप के छात्र-छात्राओं को सीबीआरआई का शैक्षिक भ्रमण के लिए प्रेरित किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन प्रो. प्रदीप कुमार द्वारा किया गया। छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया गया।

प्रो. प्रदीप कुमार ने छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया। छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया।

प्रो. प्रदीप कुमार ने छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया। छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया।

प्रो. प्रदीप कुमार ने छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया।

## CSIR-CBRI, Roorkee, Organized The Valedictory Function To Mark The Culmination Of The Janjatiya Gaurav Divas Celebrations

Roorkee (The Hawk): CSIR-CBRI, Roorkee, organized the Valedictory function to mark the culmination of the Janjatiya Gaurav Divas celebrations. The event witnessed the active participation of around 100 students from Sheffield School, Piran Kalay, and Government Secondary School, Muzaffarnagar, along with their faculty members. Dr. S. Mani inaugurated the event with a brief and insightful introduction to Janjatiya Gaurav Divas. Visting students were introduced to the Cestiphon Exhibition Gallery, which showcased the cutting-edge research and innovations at CSIR-CBRI.

The event commenced with an inspiring inaugural address by the Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI, setting the tone for the celebrations and emphasizing the importance of tribal communities in India's progress and also progress. He further provided a brief historical overview of the struggles against British rule, highlighting how the tribal communities valiantly resisted oppression and made significant contributions to India's fight for freedom and also highlighted the significant contribution of CSIR-CBRI, Roorkee, in designing and structuring EMRS schools across India. These schools are specifically designed to provide quality education to tribal students, ultimately fostering the upliftment of the tribal community and contributing to the nation's progress. To commemorate Janjatiya Gaurav Divas, CSIR-CBRI, Roorkee, organized a series of events from November 15

to November 26, 2024. These activities included drawing competitions, storytelling competitions, and school visits under the leadership of the Jigyasa Program, aimed at fostering awareness and appreciation of tribal significance and explained why it is celebrated. He elaborated on its purpose: to honor the history, cultural heritage, and contributions of tribal communities to India's progress and also progress. He was a legendary tribal leader, social reformer, and freedom fighter who played a pivotal role in India's history. The event concluded with a heartfelt Note of Thanks delivered by Dr. Mani. The program was enriched by the active participation of Mrs. Kuntal Singh, Mr. Anand, Mr. Mehar Singh, Mr. Aman, Ar. S.K. Negi, Sri Khusendra Arora, Dr. Chandan Swaroop Meena, Dr. Himshu, Dr. Tabish Alam, Dr. Navin Nishant, were presented. The seamless coordination of the event was expertly handled by Sh. Nadeem Ahmad, Chief Scientist, ensuring its smooth execution and success.



A group of students and faculty members participating in the valedictory function, standing on a stage with a banner.

### दैनिक भास्कर

जीवन के तीन मूल्य बनाते हैं अच्छा इंसान: प्रो. प्रदीप

प्रो. प्रदीप कुमार ने छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया। छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया।

## सी एस आई आर - केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में छात्र-छात्राओं का शैक्षिक भ्रमण

प्रो. प्रदीप कुमार ने छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया। छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया।

प्रो. प्रदीप कुमार ने छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया। छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया।

प्रो. प्रदीप कुमार ने छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया। छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया।

प्रो. प्रदीप कुमार ने छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया। छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया।



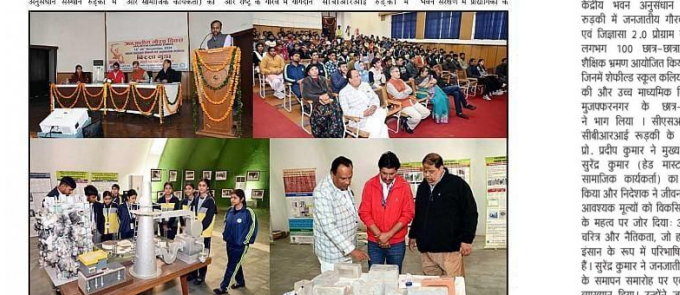
A group of students and faculty members participating in the educational tour, looking at a display.



A group of students and faculty members participating in the educational tour, looking at a display.

### सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में जनजातीय गौरव दिवस एवं जिज्ञासा प्रोग्राम में 100 छात्र-छात्राओं का शैक्षिक भ्रमण आयोजित

रुड़की (दैनिक भास्कर)। मुद्रकमण्डप के छात्र-छात्राओं को सीबीआरआई का शैक्षिक भ्रमण के लिए प्रेरित किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन प्रो. प्रदीप कुमार द्वारा किया गया। छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया गया।



A large group of students and faculty members participating in the educational tour, standing in a line.

### खतब देवना रुड़की। सी एस आई आर

प्रो. प्रदीप कुमार ने छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया। छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया।

प्रो. प्रदीप कुमार ने छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया। छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया।

प्रो. प्रदीप कुमार ने छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया।

### अत्याधुनिक तकनीक से रूबरू हुए छात्र-छात्राएं

प्रो. प्रदीप कुमार ने छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया। छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया।

प्रो. प्रदीप कुमार ने छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया। छात्रों को सीबीआरआई के महत्व और उनके जीवन में इसके योगदान के बारे में बताया।



A group of students and faculty members participating in the educational tour, looking at a display.



A group of students and faculty members participating in the educational tour, looking at a display.

Hon'ble Secretary, Shri K. Srinivas, Ministry of Housing & Urban Affairs,  
 Gol New Delhi to CSIR-CBRI, on Nov. 24, 2024

## भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण प्रयोगशाला का उद्घाटन

उड़ी प्रिंटेड कंक्रीट बिल्डिंग सुविधा के साथ देश की पहली प्रयोगशाला रुड़की में



प्रयोगशाला का शुभारम्भ करते केन्द्रीय सचिव।

रुड़की (एसएनबी)। केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण और उड़ी प्रिंटेड कंक्रीट बिल्डिंग सुविधा प्रयोगशाला की स्थापना की गई है। यह भारत में अपनी तरह की अनूठी और अत्याधुनिक प्रयोगशाला है। प्रयोगशाला का उद्घाटन आवास और शहरी मामलों के केन्द्रीय मंत्रालय सचिव के श्रीनिवास ने किया। इस सुविधा के निर्माण के साथ सीबीआरआई रुड़की में 3 मंजिला प्रीकास्ट प्रीमिनिशड वॉल्यूमेट्रिक निर्मित भवन पर पूर्ण पैमाने पर भूकंपीय परीक्षण और दो मंजिला, उड़ी कंक्रीट प्रिंटेड बिल्डिंग की छपाई भी शुरू करेगा। इस अवसर पर सीबीआरआई, रुड़की के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने राष्ट्रीय आवश्यकताओं को पूरा करने और

आम आदमी तक किफायती कीमत पर सुरक्षित, उभरती, जलवायु अनुकूल तकनीकों को पहचानने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि यह सुविधाएं प्राथमिकता

वाले क्षेत्र के रूप में मजबूत मौजूदा, नई और पारंपरिक भवन प्रौद्योगिकियों के विकास और सुधार पर ध्यान केंद्रित करेंगी।

### एनईटीएफ परीक्षण सुविधा से किया जा सकेगा मूल्यांकन

एनईटीएफ भारत में एक अनेखी और अत्याधुनिक परीक्षण सुविधा है, जिसमें अर्ध-स्वैतिक, रिवर्स साइक्लिक और छद्म-गतिशील लोडिंग स्थितियों के अंतर्गत 12 मीटर (4 मंजिला इमारतों) की ऊंचाई तक के इमारतों और संरचनाओं का पूर्ण पैमाने पर भूकंपीय प्रदर्शन के मूल्यांकन किया जा सकेगा। नवाचारों और उभरती पारंपरिक भवन निर्माण प्रौद्योगिकियों के मटेनजर, एनईटीएफ ऐसी संरचनाओं के परीक्षण के लिए प्लेटफॉर्म, चार मंजिला तक की पूर्ण-स्तरीय भवनों, महत्वपूर्ण उपकरणों और प्रणालियों को भूकंप नियमों के साथ उनके अनुपालन की जांच की जा सकेगी और भूकंपीय घटनाओं के दौरान नुकसान को कम करने और जीवन सुरक्षा के उद्देश्य से भूकंप रेट्रोफिट तकनीकों की प्रभावशीलता को सत्यापित किया जा सके।

### सीबीआरआई में हुई भूकंप परीक्षण सुविधा एवं प्रयोगशाला की स्थापना

रुड़की। केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) में राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण सुविधा (एनईटीएफ) और उड़ी प्रिंटेड कंक्रीट बिल्डिंग प्रयोगशाला की स्थापना की गई है। यह देश में अभी तक की अत्याधुनिक प्रयोगशाला है। जिसका उद्घाटन रविवार को आवास एवं शहरी मंत्रालय, नई दिल्ली के सचिव के श्रीनिवास ने किया। सीबीआरआई निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि राष्ट्रीय आवश्यकताओं को पूरा करने और आम आदमी तक किफायती कीमत पर सुरक्षित, उभरती, जलवायु अनुकूल तकनीकों को पहचानने के लिए यह प्रयोगशाला मददगार होगी। डॉ. अजय चौरसिया ने बताया कि एनईटीएफ के जरिए 12 मीटर यानी 4

दोरा में अभी तक की अत्याधुनिक प्रयोगशाला मंजिला इमारतों की ऊंचाई तक भूकंपीय प्रदर्शन का मूल्यांकन किया जा सकेगा। भूकंपीय घटनाओं के दौरान नुकसान को कम करने के उद्देश्य से यह प्रयोगशाला महत्वपूर्ण साबित होगी। इससे रेट्रोफिट तकनीकों की प्रभावशीलता को भी सत्यापित किया जा सकेगा। पूर्वानुमान के लिए संख्यात्मक मॉडल विकसित करने में भी इसका उपयोग होगा। इसके साथ ही सीबीआरआई के इस कदम से अनुसंधान करने और आम आदमी के लिए उड़ी तकनीकी आधारित भवनों के निर्माण को बढ़ावा मिलेगा। इस मौके पर डॉ. एसके नेगी, डॉ. डॉनो कानुनी, आशीष कपूर, जलजय पारसर, सुतम कुमार आदि मौजूद रहे। सचिव

## शोध सीएसआईआर-सीबीआरआई की अनूठी पहल

### राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण और उड़ी प्रिंटेड कंक्रीट प्रयोगशाला का उद्घाटन

राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण और उड़ी प्रिंटेड कंक्रीट प्रयोगशाला का उद्घाटन 24 नवंबर (शुक्रवार) को सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) में हुआ। इस अवसर पर सीबीआरआई, रुड़की के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने राष्ट्रीय आवश्यकताओं को पूरा करने और आम आदमी तक किफायती कीमत पर सुरक्षित, उभरती, जलवायु अनुकूल तकनीकों को पहचानने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि यह सुविधाएं प्राथमिकता

वाले क्षेत्र के रूप में मजबूत मौजूदा, नई और पारंपरिक भवन प्रौद्योगिकियों के विकास और सुधार पर ध्यान केंद्रित करेंगी।

एनईटीएफ ऐसी संरचनाओं के परीक्षण के लिए प्लेटफॉर्म, चार मंजिला तक की पूर्ण-स्तरीय भवनों, महत्वपूर्ण उपकरणों और प्रणालियों को भूकंप नियमों के साथ उनके अनुपालन की जांच की जा सकेगी और भूकंपीय घटनाओं के दौरान नुकसान को कम करने और जीवन सुरक्षा के उद्देश्य से भूकंप रेट्रोफिट तकनीकों की प्रभावशीलता को सत्यापित किया जा सके।



शोध कार्य का अवलोकन करते हुए श्रीनिवास।



## बिल्डिंग पर भूकंप का प्रभाव जानने में मददगार साबित होगी प्रयोगशाला : श्रीनिवास

रुड़की सीबीआरआई में शीडी प्रिंटेड कंक्रीट प्रयोगशाला की हुई स्थापना

राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण सुविधा (एनईटीएफ) और उड़ी प्रिंटेड कंक्रीट बिल्डिंग प्रयोगशाला का उद्घाटन 24 नवंबर (शुक्रवार) को सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) में हुआ। इस अवसर पर सीबीआरआई, रुड़की के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने राष्ट्रीय आवश्यकताओं को पूरा करने और आम आदमी तक किफायती कीमत पर सुरक्षित, उभरती, जलवायु अनुकूल तकनीकों को पहचानने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि यह सुविधाएं प्राथमिकता



आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव श्रीनिवास ने किया उद्घाटन। मुख्य विज्ञानी डॉ. चौरसिया ने भी इस तकनीक के बारे में विस्तार से दी जानकारी।

अजय चौरसिया ने भी इस तकनीक के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर डॉ. एसके नेगी, डॉ. डॉनो कानुनी, आशीष कपूर, जलजय पारसर, सुतम कुमार आदि मौजूद रहे। सचिव

# आयुर्वेद उतना ही पुराना है, जितने हमारे वेद : प्रो. प्रदीप

## ■ केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में मनाया गया आयुर्वेद दिवस

रुड़की, 12 नवम्बर (अनिल): सीएसआईआर- केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में नौवां आयुर्वेद दिवस धूमधाम से मनाया गया। समारोह का उद्घाटन संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने दीप प्रज्वलित जलाकर किया। इस अवसर पर प्रो. प्रदीप कुमार ने कहा कि आयुर्वेद उतना ही पुराना है, जितने हमारे वेद। आयुर्वेद का वर्णन अथर्ववेद में मिलता है।

संस्थान की स्वास्थ्य एवं चिकित्सा समिति के अध्यक्ष डॉ. प्रकाश चंद्र थपलियाल ने बताया कि आयुर्वेदिक उपचार प्रणाली सबसे पुरानी और व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली पद्धति में से एक है। आयुर्वेदिक



महिला चिकित्सक को सम्मानित करते हुए संस्थान के निदेशक।

उपचार में अधिकांश दवाएं हर्बल प्रकृति की होती हैं और इसलिए दुष्प्रभाव से मुक्त होती हैं। इस अवसर पर, आयुष्मान आरोग्य मंदिर, भंगेड़ी, सेपथरी डॉ. चित्रा वल्लिया ने आयुर्वेद

के इतिहास और ऑस्टियोआर्थोराइटिस के प्रबंधन पर जानकारी दी तथा डॉ. प्रियंका सिंह, आयुर्वेदशाला, बेलड़ी द्वारा आयुर्वेद के साथ स्वस्थ जीवनशैली और दैनिक दिनचर्या पर

रोचक व्याख्यान दिया। इस अवसर पर एस.के. नेगी, डॉ. सुनील शर्मा, डॉ. बी.के. सुमन, डॉ. एम.के. सिन्हा, डॉ. नीरज जैन, डॉ. राजेश वर्मा, सुशील आदि उपस्थित रहे।

का पढ़ा उत थाप दिा है. न्हा पेप दिा में : बत अधि नही न्हा एक सुन की : जित

## मानव जीवन में आयुर्वेद का विशेष महत्व : कुमार

जागरण संवाददाता, रुड़की : केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में नौवां आयुर्वेद दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि आयुर्वेद उतना ही पुराना है, जितने कि वेद। आयुर्वेद का वर्णन अथर्ववेद में मिलता है। मानव जीवन में इसके महत्व के कारण लोग अब आयुर्वेद को पांचवां वेद कहते हैं। दैनिक

दिनचर्या का पालन करने और जीवनशैली संबंधी बीमारियों को ठीक करने में आयुर्वेद महत्वपूर्ण है।

संस्थान की स्वास्थ्य एवं चिकित्सा समिति के अध्यक्ष डा. प्रकाश चंद्र थपलियाल ने कहा कि आयुर्वेदिक उपचार प्रणाली सबसे पुरानी और व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली पद्धति में से एक है। ऐसा माना जाता है कि आयुर्वेदिक उपचार में

अधिकांश दवाएं हर्बल प्रकृति की होती हैं और इसलिए दुष्प्रभाव से मुक्त होती हैं। साथ से अधिक स्टाफ और सेवानिवृत्त सदस्यों ने परिवार के साथ संस्थान के ओडीएस सभागार में मुख्य कार्यक्रम में भाग लिया और विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान का लाभ उठाया। इस अवसर पर आयुष्मान आरोग्य मंदिर, भंगेड़ी की डा. चित्रा वल्लिया ने आयुर्वेद के इतिहास और

आस्टियोआर्थोराइटिस के प्रबंधन पर जानकारी दी। वहीं, डा. प्रियंका सिंह, आयुर्वेदशाला, बेलड़ी की ओर से आयुर्वेद के साथ स्वस्थ जीवनशैली और दैनिक दिनचर्या पर रोचक व्याख्यान दिया। इस अवसर पर एसके नेगी, डा. सुनील शर्मा, डा. बीके सुमन, डा. एमके सिन्हा, डा. नीरज जैन, डा. राजेश वर्मा, सुशील आदि उपस्थित रहे।

## सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में जिज्ञासा 2.0 के तहत मेरठ के छात्रों का शैक्षणिक भ्रमण

By ADMIN  
Nov 7, 2024



1 / 161 Next »

बाराह	राजी	स्वा
समाप्त	पुस्तक	के
समाप्त	को	के
पीठ	के	पर

सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में जिज्ञासा 2.0 के तहत मेरठ के छात्रों का शैक्षणिक भ्रमण

सीएसआईआर- केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की में जिज्ञासा 2.0 प्रोग्राम के तहत मेरठ छावनी के पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय पंजाब साइंस के छात्रों के लिए एकदिवसीय शैक्षणिक भ्रमण आयोजित किया गया। इस भ्रमण में कक्षा 8 से 12 तक के करीब 400 छात्र-छात्राओं और 22 शिक्षकों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों को सीबीआरआई के इतिहास, महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट्स, आधुनिक तकनीकों से ऐतिहासिक इमारतों के परीक्षण और संरक्षण, और देश के विकास में संस्थान के योगदान से परिचित कराना था। साथ ही, छात्रों को जीवन में प्रौद्योगिकी के उपयोग और भवन संरक्षण के तरीकों के बारे में जानकारी दी गई।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक एस. के. नेगी, और डॉ. नदीम अहमद के मार्गदर्शन में छात्रों को टेक्नोलॉजी पार्क, प्रयोगशालाओं, और प्रदर्शन गैलरी का भ्रमण कराया गया। वैज्ञानिक चंद्रमान पटेल और डॉ. सोमिन्द्रा मैथी ने 'वैस्ट टू वेल्थ' और 'आईओटी के अनुप्रयोग' जैसे विषयों पर प्रस्तुतियाँ दीं।

संस्थान के निदेशक प्रोफेसर प्रदीप कुमार समवातों ने अपने व्यस्त कार्यक्रम से समय निकालकर छात्रों को प्रेरित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. चन्दन स्वरूप मीणा ने किया। कार्यक्रम में वैज्ञानिकों की टीम और ओडीएस टीम के सदस्य उपस्थित रहे।

घोरे के समापन पर, छात्रों और शिक्षकों ने सीएसआईआर-सीबीआरआई की इस पहल की सराहना करते हुए प्रतिक्रिया दी और इस अनुभव को अपने शैक्षणिक विकास में महत्वपूर्ण बताया।



« हरिद्वार और आसपास के क्षेत्रों में हाथियों की दस्तक से दहशत, हरिद्वार के ग्रामीण क्षेत्रों में जंगली जानवरों का खतरा हाथियों को रोकना वन विभाग के लिए बड़ी चुनौती, देखे विडियो ,,,, बरकरार,हाथी की दस्तक से ग्रामीण भयभीत, »

KAWACH compendium launched today by Hon'ble CM of H.P. at Samarth 2024.

## पहाड़ पर बोझ बन रहे मैदान

राज्य ब्यूरो, जागरण • शिमला : पहाड़ों पर भूस्खलन के अलावा अन्य



आशीष पिप्ल  
• जागरण

प्रकृतिक आपदाओं का सबसे बड़ा कारण बढ़ता अतिरिक्त बोझ है। भवन निर्माण के लिए आज हर कोड़े परंपरागत तकनीक को छोड़कर आधुनिकता की दौड़ में शामिल हो रहा है। बुजुर्गों को वैज्ञानिक आधार पता था और उसी आधार पर वह भवन निर्माण करते थे। यह कहना है कि सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की के वरिष्ठ विज्ञानी आशीष पिप्ल का, जो हिमाचल के इंजीनियरों को भवन निर्माण का प्रशिक्षण देने के साथ आम लोगों को महत्वपूर्ण जानकारी दे रहे हैं। उनका कहना है कि पुराने समय में भवन निर्माण के लिए इस्तेमाल होने वाला पत्थर, मिट्टी और अन्य सामग्री आसपास की ही होती थी। वर्तमान में मकान का सारा सामान मैदानी क्षेत्रों से आ रहा है। इस कारण पहाड़ का बोझ और बढ़ाया जा रहा है। स्थानीय सामग्री से भवन निर्माण किया जाए तो हम अपनी जमीन का बोझ कम कर सकते हैं।

• भूस्खलन व आपदाओं का कारण बन रही मैदान से लाई जा रही भवन निर्माण सामग्री

• हिमाचल को तीन जौन में बांटकर सुरक्षित भवन तकनीक पर किताब तैयार



आशीष ने बताया कि चाहे ऊंचे पहाड़ी क्षेत्र हों या मध्य और निचले, यहां एक जैसे भवनों का निर्माण हो रहा है। हालांकि सबकी जरूरतें और भौगोलिक स्थितियां अलग-अलग हैं। इंजीनियरों को इसी आधार पर प्रशिक्षित किया जा रहा है। हिमाचल प्रदेश भूकंप के लिए अति संवेदनशील है। ऐसे में भूकंपरोधी मकान बनाए जाना आवश्यक है। इसके लिए राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने सीबीआरआई रुड़की के इंजीनियरों के साथ मिलकर आम लोगों को सुविधा

पेड़ों की वनावट बताती है जमीन का हाल

आशीष का कहना है कि भवन निर्माण के लिए जैसे जमीन की क्षमता की जांच होती है। लेकिन आम व्यक्ति पेड़ों की वनावट के आधार पर जमीन का हाल जान सकता है। पेड़ हमेशा सीधे आकाश की ओर जाते हैं। यदि पुराने पेड़ों में तिरछापन है तो भूमि घंसाव के कारण ऐसे होने की संभावना रहती है। यदि नए पेड़ों में भी ऐसा है तो यहां भूमि घंसाव जारी है।



के लिए भवन निर्माण पर पुस्तक तैयार की है। मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू सोमवार को समर्थ 2024 कार्यक्रम के तहत इस पुस्तक का विमोचन करेंगे। इसमें समझाया गया है कि कैसे आम व्यक्ति बिना इंजीनियर की मदद के भूकंपरोधी मकान बना सकेगा। इसमें बहुत सरल तरीके से डिजाइन के साथ मकान बनाने की तकनीक बताई गई है। हिमाचल को तीन जौन में बांटकर भवन निर्माण की तकनीक भौगोलिक स्थिति के आधार पर बताई गई है।

Visit of Students on 10Oct., 2024 under Jigyasa 2.0 Activities





<https://www.financialexpress.com/business/infrastructure-after-delhi-airport-canopy-collapse-government-enlists-cbri-to-advise-airport-operators-on-structural-safety/3632035/>

## After Delhi Airport canopy collapse, government enlists CBRI to advise airport operators on structural safety

The decision to engage CBRI follows several concerning incidents, including canopy collapses at Jabalpur and Rajkot airports in June. A senior official from the Ministry of Civil Aviation confirmed that the CBRI will guide the structural aspects of airport infrastructure, ensuring operators take necessary precautions to prevent such occurrences in the future.

Written by [FE Online](#)

Updated: October 6, 2024 16:24 IST



After Delhi Airport canopy collapse, government enlists CBRI to advise airport operators on structural safety.

In response to a series of structural failures at various airports, including the partial collapse of a canopy at Terminal 1 (T1) of Delhi's Indira Gandhi International Airport in June, the Indian government has enlisted the expertise of the Central Building Research Institute (CBRI). The Roorkee-based CBRI has been tasked with advising airport operators across the country on structural safety and integrity.

The decision to engage CBRI follows several concerning incidents, including canopy collapses at Jabalpur and Rajkot airports in June. A senior official from the Ministry of Civil Aviation confirmed that the CBRI will guide the structural aspects of airport infrastructure, ensuring operators take necessary precautions to prevent such occurrences in the future.

In addition to CBRI's involvement, the ministry is also organizing a technical workshop for airport operators, where experts from the institute will provide specialized training on structural safety and resilience.

### Also Read



**Chandigarh-Dibrugarh Express derailment...**



**Inflation calculator: What will be the value of Rs...**



**India breaks the mould, signs liberal treaty with UAE**



**Based on Japan's Shinkansen technology, wi...**

### Incident at Delhi Airport

On June 28, a partial collapse of a canopy at the old departure forecourt of T1 in Delhi resulted in one fatality and injuries to nine others. Heavy rains at the time of the incident were a significant contributing factor. The structural failure prompted an immediate review by structural engineers from IIT Delhi. The ministry is now reviewing the report from IIT Delhi and is continuing to examine the structural integrity of the rest of T1.

### Broader Inspection and Study

In the aftermath of the incident at Delhi's Terminal 1, the ministry ordered the Airports Authority of India (AAI) to conduct inspections of all major and minor airports across the country. This comprehensive review is aimed at identifying any structural vulnerabilities and ensuring that airports can withstand extreme weather conditions and other stressors.

According to ministry sources, a detailed structural study of Terminals 2 and 3 at the Delhi airport is also underway, conducted by a team from IIT Madras. However, DIAL (Delhi International Airport Ltd), which operates the Delhi airport, has yet to provide an official comment on the study's progress.

### Nationwide Review of Airport Infrastructure

The CBRI's advisory role is part of a broader initiative to safeguard India's airport infrastructure. The structural study at airports managed by AAI is ongoing, with a focus on both minor and major facilities. Following the June 28 incident, the AAI was directed to issue a circular instructing all airports under its jurisdiction to conduct thorough inspections of their structural strength.

The ministry emphasised the importance of these inspections in its statement, noting that findings from the studies would inform future safety measures and long-term policies to prevent similar incidents. These measures are seen as crucial as India's aviation sector continues to expand, with 157 operational airports, heliports, and waterdromes currently in service and more expected to open in the coming years.

In June, Minister of State for Civil Aviation Murlidhar Mohol informed Rajya Sabha that the tensile fabric canopies at Jabalpur and Rajkot airports had torn during incidents on June 27 and 29, respectively. Investigations into the causes of these failures are underway.

As air travel continues to rise, ensuring the safety and reliability of airport infrastructure is a key priority for both the government and airport operators. With the involvement of CBRI, IIT Delhi, and IIT Madras, authorities aim to address structural vulnerabilities and restore confidence in airports. [Market Data](#)

(With PTI inputs)

# Uttarakhand: सीबीआरआई रुड़की की देखरेख में होगा तृतीय केदार तुंगनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार, सीएम ने दी अनुमति

अमर उजाला ब्यूरो, देहरादून Published by: अमर उजाला Updated Mon, 30 Sep 2024 07:38 PM IST

सार

42309 Followers देहरादून

बदरीनाथ केदारनाथ केदारनाथ मंदिर समिति (बीकेटीसी) के अध्यक्ष अर्जुन अजय ने तुंगनाथ मंदिर के संरक्षण कार्य के लिए अनुमति देने पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का आभार जताया है।



तुंगनाथ मंदिर - फोटो : अमर उजाला फाइल फोटो



विस्तार

Follow Us

विश्व में सबसे अधिक ऊंचाई पर स्थित तृतीय केदार के नाम से विख्यात तुंगनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार, सौंदर्यीकरण और सुरक्षात्मक कार्यों के लिए प्रदेश सरकार ने अनुमति दे दी है। इस संबंध में सचिव धर्मस्व हरिचंद्र सेमवाल ने बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति को पत्र जारी किया। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की (सीबीआरआई) की देखरेख में मंदिर के संरक्षण कार्य किए जाएंगे। बदरीनाथ केदारनाथ केदारनाथ मंदिर समिति (बीकेटीसी) के अध्यक्ष अर्जुन अजय ने तुंगनाथ मंदिर के संरक्षण कार्य के लिए अनुमति देने पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का आभार जताया है।

उन्होंने गत वर्ष भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग (एएसआई) और भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) के महानिदेशक को पत्र लिखकर समुद्र तल से 11,942 फीट की ऊंचाई पर स्थित तुंगनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार, सौंदर्यीकरण व सुरक्षात्मक कार्यों को कराने के लिए तकनीकी परामर्श उपलब्ध कराने का आग्रह किया था।

विज्ञापन



## सीबीआरआई रुड़की की देखरेख में होगा तुंगनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार

प्रदेश की धामी सरकार ने दी मंदिर के संरक्षण के कार्य को कराने की अनुमति

अमर उजाला ब्यूरो

देहरादून। विश्व में सबसे अधिक ऊंचाई पर स्थित तृतीय केदार के नाम से विख्यात तुंगनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार, सौंदर्यीकरण और सुरक्षात्मक कार्यों के लिए प्रदेश सरकार ने अनुमति दे दी है। इस संबंध में सचिव धर्मस्व हरिचंद्र सेमवाल ने बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति को पत्र जारी किया। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की (सीबीआरआई) की देखरेख में मंदिर के संरक्षण कार्य किए जाएंगे। बदरीनाथ केदारनाथ केदारनाथ मंदिर समिति (बीकेटीसी) के अध्यक्ष अर्जुन अजय ने तुंगनाथ मंदिर के संरक्षण कार्य के लिए अनुमति देने पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का आभार जताया है।

उन्होंने गत वर्ष भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग (एएसआई) और भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) के महानिदेशक को पत्र लिखकर समुद्र तल से 11,942 फीट की ऊंचाई पर स्थित तुंगनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार, सौंदर्यीकरण व सुरक्षात्मक कार्यों को कराने के लिए तकनीकी परामर्श उपलब्ध कराने का आग्रह किया था।

एएसआई, जीएसआई के तकनीकी विशेषज्ञों संग समन्वय बना होगा कार्य

बीकेटीसी को मिल जाएगा। इस बीच बीकेटीसी के अध्यक्ष अर्जुन अजय ने शासन को एएसआई व जीएसआई की रिपोर्ट का हवाला देते तुंगनाथ मंदिर के संरक्षण कार्यों के लिए सहमति देने का आग्रह किया था। इस पर सचिव धर्मस्व व संस्कृति हरिचंद्र सेमवाल ने बीकेटीसी को पत्र लिखकर इनकी अनुमति प्रदान कर दी है।

शासन ने मंदिर की पौराणिकता को देखते हुए इसकी विस्तृत योजना रिपोर्ट (डीपीआर) और संपूर्ण कार्य सीबीआरआई रुड़की के माध्यम से करने के निर्देश दिए हैं। शासन ने यह भी निर्देश दिए कि संपूर्ण कार्य एएसआई और जीएसआई के तकनीकी विशेषज्ञों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए किए जाएंगे।

तुंगनाथ मंदिर - 8800

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) के महानिदेशक को पत्र लिखकर समुद्र तल से 11,942 फीट की ऊंचाई पर स्थित तुंगनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार, सौंदर्यीकरण व सुरक्षात्मक कार्यों को कराने के लिए तकनीकी परामर्श उपलब्ध कराने का आग्रह किया था।

इस पर दोनों विभागों के विशेषज्ञों ने मंदिर का अध्ययन कर रिपोर्ट बीकेटीसी को सौंपी थी। रिपोर्ट के बाद बीकेटीसी ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में केडरनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार, सौंदर्यीकरण व सुरक्षात्मक कार्यों को कराने के लिए तकनीकी परामर्श उपलब्ध कराने का आग्रह किया था।

एएसआई, जीएसआई के तकनीकी विशेषज्ञों संग समन्वय बना होगा कार्य

बीकेटीसी को मिल जाएगा। इस बीच बीकेटीसी के अध्यक्ष अर्जुन अजय ने शासन को एएसआई व जीएसआई की रिपोर्ट का हवाला देते तुंगनाथ मंदिर के संरक्षण कार्यों के लिए सहमति देने का आग्रह किया था। इस पर सचिव धर्मस्व व संस्कृति हरिचंद्र सेमवाल ने बीकेटीसी को पत्र लिखकर इनकी अनुमति प्रदान कर दी है।

शासन ने मंदिर की पौराणिकता को देखते हुए इसकी विस्तृत योजना रिपोर्ट (डीपीआर) और संपूर्ण कार्य सीबीआरआई रुड़की के माध्यम से करने के निर्देश दिए हैं। शासन ने यह भी निर्देश दिए कि संपूर्ण कार्य एएसआई और जीएसआई के तकनीकी विशेषज्ञों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए किए जाएंगे।

इस पर दोनों विभागों के विशेषज्ञों ने मंदिर का अध्ययन कर रिपोर्ट बीकेटीसी को सौंपी थी। रिपोर्ट के बाद बीकेटीसी ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की से भी इस संबंध में राय मांगी है। सीबीआरआई के वैज्ञानिक पिछले दिनों तुंगनाथ का भ्रमण कर चुके हैं। उनकी रिपोर्ट भी जल्दी ही बीकेटीसी को मिल जाएगी।

**Kedarnath Yatra: सोनप्रयाग में पैदल बाईपास का कार्य फिर शुरू, भूस्खलन जोन से मिलेगी निजात, 70 मजदूर जुटे**

इस बीच बीकेटीसी के अध्यक्ष अर्जुन अजय ने शासन को एएसआई व जीएसआई की रिपोर्ट का हवाला देते तुंगनाथ मंदिर के संरक्षण कार्यों के लिए सहमति देने का आग्रह किया था। इस पर सचिव धर्मस्व व संस्कृति हरिचंद्र सेमवाल ने बीकेटीसी को पत्र लिखकर इसकी अनुमति प्रदान कर दी है।

शासन ने मंदिर की पौराणिकता को देखते हुए इसकी विस्तृत योजना रिपोर्ट (डीपीआर) और संपूर्ण कार्य सीबीआरआई रुड़की के माध्यम से कराने के निर्देश दिए हैं। शासन ने यह भी निर्देश दिए कि संपूर्ण कार्य एएसआई और जीएसआई के तकनीकी विशेषज्ञों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए किए जाएंगे।

# अपने विचार हिंदी में अभिव्यक्त करें : गोयल

## सीबीआरआई में हिंदी पखवाड़े का समापन, प्रतियोगिता के विजेताओं को किया सम्मानित

संवाद न्यूज एजेंसी

रुड़की। सीबीआरआई में हिंदी पखवाड़े के समापन पर अतिथियों ने सरकारी कामकाज के साथ ही अपने विचार व्यक्त करने में भी हिंदी के उपयोग पर बल दिया। इस मौके पर हिंदी पखवाड़े के दौरान हुई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित किया गया।

मंगलवार को सीबीआरआई में हिंदी पखवाड़े का समापन पुरस्कार वितरण समारोह के साथ किया गया। मुख्य अतिथि राष्ट्रीय जल संस्थान के निदेशक डॉ. मनमोहन कुमार गोयल ने कहा कि हिंदी हमारे गर्व की भाषा है। संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग करना हम सबका दायित्व है। हिंदी एक ऐसी सरल भाषा है जो देश के जनसामान्य से जुड़ी है और प्रयोग करने



रुड़की स्थित सीबीआरआई में आयोजित हिंदी पखवाड़े के समापन पर पुस्तिका का विमोचन करते संस्थान के निदेशक व अन्य । श्रेत : संस्थान

में आसान है।

इस अवसर पर सीबीआरआई की ओर से प्रकाशित वार्षिक पत्रिका निर्माणिका का विमोचन भी किया गया। बताया कि राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए संस्थान में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी, हिंदी लेखन प्रतियोगिता, नोटिंग एवं

डाफ्टिंग प्रतियोगिता, हिंदी आशु भाषण प्रतियोगिता, हिंदी प्रश्नोत्तरी आदि प्रतियोगिता आयोजित की गईं। समापन अवसर पर प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इनमें सुधीर कुमार को प्रथम, सुरील कुमार और अखनीश कुमार को द्वितीय व अमन कुमार को तृतीय पुरस्कार

प्राप्त हुआ।

इसी तरह वैज्ञानिक तकनीकी कार्य के लिए प्रोत्साहन योजना में डॉ. प्रदीप चौहान को प्रथम, सुरील कुमार को द्वितीय, आईए सिद्दिकी को तृतीय और डॉ. ताबिश आलम, राकेश कुमार, डॉ. रविन्द्र बिष्ट, डॉ. सोमित्र मैती, विनीत कुमार सैनी और डॉ. सिद्धार्थ सिंह को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया।

इसके अलावा हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता में अमन कुमार को प्रथम, हुमैरा अथहर को द्वितीय, पूजा को तृतीय और विश्वास त्यागी को प्रोत्साहन पुरस्कार मिला। आशु भाषण प्रतियोगिता में अर्पण महेश्वरी को प्रथम, विनीत कुमार सैनी को द्वितीय, शान मोहम्मद को तृतीय और धीरज कुमार को प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ। इस मौके पर प्रशासन निबंधक कुमुद सिंह, भूमिका, दीपिता कर्माकर, अमन कुमार आदि मौजूद रहे।

# स्वच्छता ही सेवा व स्वच्छ भारत दिवस अभियान के तहत रुड़की रेलवे स्टेशन के आस-पास सफाई कार्यक्रम - दिनांक 30.09.2024 दिन सोमवार

## स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम

### रेलवे स्टेशन पर सीबीआरआई रुड़की और रेलवे विभाग द्वारा आयोजित किया गया स्वच्छता कार्यक्रम

रुड़की बट्टी विशाल। आज सेवा पखवाड़े के निमित्त रुड़की रेलवे स्टेशन पर सीबीआरआई रुड़की और रेलवे विभाग द्वारा एक

आकर्षक बनाना एवं लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करना था। इस अवसर पर सीबीआरआई रुड़की के उप-निदेशक हरपाल

वातावरण को स्वच्छ रखना चाहिए। स्वच्छता से न सिर्फ खुद को लाभ होता, अपितु समाज को भी लाभ होगा। उन्होंने स्टेशन अधीक्षक अरुण कुमार को सराहना करते हुए कहा



सिंह ने कहा कि स्वच्छता हमारी संस्कृति का हिस्सा है और हमें अपने आस-पास के वातावरण को स्वच्छ रखना चाहिए। उन्होंने रेलवे विभाग के अधिकारियों और

कर्मचारियों को स्वच्छता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखाने के लिए धन्यवाद दिया। इस अवसर पर रेलवे बोर्ड सदस्य और रोटररी आरसीसी अध्यक्ष पूजा नंदा ने कहा कि हमें अपने आसपास के

स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें सीबीआरआई रुड़की और रेलवे विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य रेलवे स्टेशन को स्वच्छ और

कर्मचारियों को स्वच्छता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखाने के लिए धन्यवाद दिया। इस अवसर पर रेलवे बोर्ड सदस्य और रोटररी आरसीसी अध्यक्ष पूजा नंदा ने कहा कि हमें अपने आसपास के

वातावरण को स्वच्छ रखना चाहिए। स्वच्छता से न सिर्फ खुद को लाभ होता, अपितु समाज को भी लाभ होगा। उन्होंने स्टेशन अधीक्षक अरुण कुमार को सराहना करते हुए कहा कि रेलवे स्टेशन पर स्वच्छता कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाते रहते हैं और रेलवे विभाग स्वच्छता के लिए प्रतिबद्ध है। हमें अपने यात्रियों को स्वच्छ और सुरक्षित यात्रा का अनुभव प्रदान करना है। इस अवसर पर रेलवे विभाग के अधिकारियों और कर्मचारी ने सीबीआरआई के पदाधिकारियों और कर्मचारियों के साथ मिलकर स्टेशन के प्लेटफार्म पर स्वच्छता का कार्य किया एवं अन्य यात्रियों को भी स्वच्छता के प्रति जागरूक किया।



## विज्ञान और प्रौद्योगिकी के जरिए समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर रहा सीएसआईआर : शंकर

रुड़की, 27 सितम्बर ( अनिल ) : सीएसआईआर - केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का 83वां स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। स्थापना दिवस का मुख्य समारोह संस्थान के रविन्द्रनाथ टैगोर सभागार में दीप-प्रज्वलन के साथ शुरू हुआ। इस अवसर पर केरल के आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सलाहकार ने मुख्य अतिथि श्री शंकर ने कहा कि सीएसआईआर देश की विभिन्न क्षेत्रों की समस्याओं का विज्ञान और प्रौद्योगिकी के जरिये समाधान प्रस्तुत कर रहा है। आप सभी को इतने बड़े वैज्ञानिक और अनुसंधान संगठन का हिस्सा होने पर गर्व करना चाहिए। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार ने



समारोह को संबोधित करते केरल के आपदा प्रबंधन सलाहकार।

कहा कि हमें विशेष रूप से युवा वैज्ञानिकों को अनुसंधान के अपने लक्ष्य तय करने होंगे। सीएसआईआर में 25 वर्षों से अधिक की सेवा देने वाले कर्मिकों को सम्मानित किया गया। इसके अलावा पिछले एक वर्ष की

अवधि में सेवानिवृत्त होने वाले वैज्ञानिकों और अधिकारियों को भी सम्मानित किया गया। इंटर की परीक्षा में तीन विज्ञान विषयों में 90 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले राहुल अरोड़ा पुत्र डॉ. हरीश चन्द्र अरोड़ा को सम्मानित किया गया।



## सीएसआईआर में स्थापना दिवस पर रही सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम

» मद्रलैंड संवाददाता

रुड़की। सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का 83वां स्थापना दिवस मनाया गया। मुख्य समारोह सुबह साढ़े दस बजे संस्थान के रविन्द्रनाथ टैगोर सभागार में हुआ। समारोह का शुभारम्भ दीप-प्रज्वलन के साथ शुरू हुआ। केरल राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सलाहकार शंकर ने मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए कहा कि सीएसआईआर देश की विभिन्न क्षेत्रों की समस्याओं का विज्ञान और प्रौद्योगिकी के जरिये समाधान प्रस्तुत कर रहा है। सभी को इतने बड़े वैज्ञानिक और अनुसंधान संगठन का हिस्सा होने पर गर्व करना चाहिए। सीएसआईआर की तरह ही सीबीआरआई भी भवन निर्माण से संबंधित विभिन्न प्रौद्योगिकियों के माध्यम से समाधान दे रहा है। सीबीआरआई की प्रौद्योगिकियों द्वारा लोगों के लिए आवास निर्माण की लागत में कमी आ रही है।

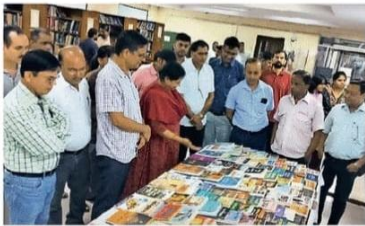


भविष्य के लिए शुभकामनाएं भी दीं। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि हमें विशेष रूप से युवा वैज्ञानिकों को अनुसंधान के अपने लक्ष्य तय करने होंगे। ताकि हम सामाजिक मुद्दों की पहचान करके कार्य कर सकें। चूँकि युवा वैज्ञानिकों को 2-3 दशकों तक संस्थान की सेवा करनी है, इसलिए उपलब्ध संसाधनों के अनुसार अपने लक्ष्यों तक पहुंचें। सीएसआईआर में 25 वर्षों से अधिक सेवा देने वाले कर्मिकों को हाथ धड़ी देकर सम्मानित किया गया। इसके अलावा पिछली एक

वर्ष की अवधि में सेवानिवृत्त होने वाले वैज्ञानिकों और अधिकारियों को घड़ी, शॉल और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इंटर की परीक्षा में तीन विज्ञान विषयों में 90 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले राहुल अरोड़ा पुत्र डॉ. हरीश चन्द्र अरोड़ा को 3 हजार रुपये देकर सम्मानित किया गया। स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में सीबीआरआई परिवार के बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। इसमें विजेता बच्चों को पुरस्कार दिए गए। इसके अलावा संस्थान के द्विवार्षिक प्रतिवेदन का विमोचन भी अतिथियों द्वारा किया गया। समारोह का स्वागत संबोधन संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक एसके नेगी ने दिया। डॉ. डीपी कानूनगो, मुख्य वैज्ञानिक ने मुख्य अतिथि का परिचय दिया। डॉ. अजय चैरसिया, मुख्य वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। गरिमा सिंह ने मंच संचालन किया। इस अवसर पर संस्थान की प्रशासन नियंत्रक कुमुद सिंह, डॉ. हरपाल सिंह, डॉ. पीसी थपलियाल, विनीत सेनी, नवल किशोर, किशोर कुलकर्णी, चंदन स्वरूप मीना, मेहर सिंह, अमन कुमार, विक्रम सिंह आदि उपस्थित रहे।

## मातृभाषा को अपनाने वाले देश बढ़ रहे आगे : डा. हरपाल

जगरण संवाददाता, रुड़की: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की में हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी लगाकर किया गया। वहीं, संस्थान में एक अक्टूबर तक हिंदी पखवाड़े के तहत कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। इस मौके पर विज्ञानी डा. हरपाल ने कहा कि मातृभाषा को अपनाने से ही देश आगे बढ़ेगा।



- सीबीआरआई रुड़की में हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी लगाकर किया गया हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ
- हिंदी टिप्पण आलेखन, आशु भाषण, हिंदी प्रश्नोत्तरी व हिंदी लेखन प्रतियोगिता हेमंगी आयोजित

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी लगाकर किया गया।

संस्थान में शुक्रवार को हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए वरिष्ठतम विज्ञानी डा. हरपाल सिंह ने कहा कि दुनिया में वही देश आगे बढ़ रहे हैं जिन्होंने अपनी मातृभाषा को अपनाया है। चाहे वे चीन, जापान, स्पेन या फिर फ्रांस हों।

उन्होंने सभी से मातृभाषा की पुस्तकें पढ़ने की आदत विकसित करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि हमें हिंदी में कामकाज करने की प्रवृत्ति को गंभीरता के साथ अपनाना होगा।

राजभाषा विभाग की ओर से बनाए गए नियमों का पालन करके अपने दायित्वों का निर्वाह कर राजभाषा हिंदी के प्रति अपना स्वाभाविक प्रेम दर्शाना होगा। मुख्य विज्ञानी डा.

थपलियाल ने संस्थान में चलाए जा रहे 'पुस्तक पर चर्चा' कार्यक्रम के अंतर्गत साहित्य अकादमी पुरस्कृत लेखक आरके नारायण की पुस्तक

को। हिंदी अधिकारी मेहर सिंह ने बताया कि हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी टिप्पण आलेखन, आशु भाषण, हिंदी प्रश्नोत्तरी और हिंदी लेखन प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। इसके साथ ही कर्मियों के बच्चों के लिए भी हिंदी कविता पाठ तथा भाषण प्रतियोगिता आयोजित होगी। हिंदी पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण एक अक्टूबर को होगा। हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का संयोजन दीप्ति कर्माकर ने किया। इस अवसर पर डा. नीरज जैन, डा. राजेश वर्मा, डा. प्रदीप चौहान, अश्वनीश कुमार, योगी चौधरी, हुमा अहमद, खुशवंत अरोड़ा, धर्म सिंह नेगी, अमन कुमार, धिनीत

### मातृभाषा की पुस्तकें पढ़ने की आदत विकसित करें : डॉ. हरपाल

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में हिंदी पखवाड़े के तहत किया गया पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन



रुड़की निजान सीबीआरआई में हिंदी पखवाड़े का आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हैं अधिकारी और विज्ञानी। डॉ. हरपाल

माई हिंदी रिपोर्टर  
रुड़की। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई-सीबीआरआई) में हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया जा रहा है। संस्थान में हिंदी पखवाड़े के तहत पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. हरपाल सिंह ने किया। उन्होंने कहा कि दुनिया में वही देश आगे बढ़ रहे हैं जिन्होंने अपनी मातृभाषा को अपनाया है। चाहे वह चीन, जापान, स्पेन, फ्रांस हो। उन्होंने सभी से मातृभाषा की पुस्तकें पढ़ने की आदत

एक अक्टूबर को समापन पर वितरित की जाएगी पुस्तकें  
विकसित करने का आग्रह किया। संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. प्रकाश चंद धरलियाल ने संस्थान में चलाए जा रहे 'पुस्तक पर चर्चा' कार्यक्रम के अंतर्गत साहित्य अकादमी पुरस्कृत लेखक आरके नारायण की पुस्तक 'मालगुडी का चलता पुर्जा' पर चर्चा की। हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का संयोजन दीप्ति कर्माकर ने किया। सीबीआरआई के हिंदी अधिकारी मेहर सिंह ने बताया कि हिंदी पखवाड़े के दौरान

हिंदी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता, आशु भाषण प्रतियोगिता, हिंदी प्रश्नोत्तरी, हिंदी कविता पाठ तथा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन होगा। इसके साथ ही बच्चों के लिए भी हिंदी कविता पाठ और भाषण प्रतियोगिता भी आयोजित की जाएगी। हिंदी पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण एक अक्टूबर को होगा। इस अवसर पर डॉ. नीरज जैन, डॉ. राजेश वर्मा, डॉ. प्रदीप चौहान, अश्वनीश कुमार, योगी चौधरी, हुमा अहमद, धर्म सिंह नेगी, अमन कुमार, धिनीत चौहान आदि उपस्थित रहे।

## 'मातृभाषा को अपनाने वाले देश ही दुनिया में आगे'

रुड़की, संवाददाता। सीबीआरआई में शुक्रवार को हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी के उद्घाटन के साथ संस्थान के वरिष्ठतम वैज्ञानिक डा. हरपाल सिंह ने किया। एक अक्टूबर तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर डा. सिंह ने कहा कि दुनिया में वही देश आगे बढ़ रहे हैं जिन्होंने अपनी मातृभाषा को अपनाया है। मैं सभी से मातृभाषा की पुस्तकें पढ़ने की आदत विकसित करने का आग्रह करता हूँ। इसके अलावा हमें हिंदी में कामकाज करने की प्रवृत्ति को गंभीरता के साथ अपनाना होगा। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा बनाए गए नियमों का पालन कर अपने दायित्वों का निर्वाह

करना होगा। संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक डा. प्रकाश चन्द थपलियाल ने संस्थान में चलाए जा रहे 'पुस्तक पर चर्चा' कार्यक्रम के अंतर्गत साहित्य अकादमी पुरस्कृत लेखक आरके नारायण की पुस्तक 'मालगुडी का चलता पुर्जा' पर चर्चा की। हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का संयोजन दीप्ति कर्माकर ने किया। सीबीआरआई के हिंदी अधिकारी मेहर सिंह ने बताया कि हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता, आशु भाषण प्रतियोगिता, हिंदी प्रश्नोत्तरी, हिंदी लेखन प्रतियोगिता कराई जाएगी। हिंदी पखवाड़े का समापन और पुरस्कार वितरण एक अक्टूबर को होगा। इस अवसर पर डा. नीरज जैन, डा. राजेश वर्मा, डा. प्रदीप चौहान थे।

### सीबीआरआई में शुरू हुआ हिन्दी पखवाड़ा, पुस्तक प्रदर्शनी

मदरलैंड संवाददाता

रुड़की। सीबीआरआई-सीबीआरआई में शुक्रवार से हिंदी पखवाड़े का आयोजन शुरू हो गया। संस्थान में हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी के उद्घाटन के साथ किया गया। हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. हरपाल सिंह द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि दुनिया में वही देश आगे बढ़ रहे हैं जिन्होंने अपनी मातृभाषा को



अपनाया है। चीन, जापान, स्पेन, फ्रांस इसके उदाहरण हैं। वह सभी से मातृभाषा की पुस्तकें पढ़ने की आदत विकसित करने का आग्रह करते हैं। इसके अलावा, हमें हिन्दी कामकाज करने की प्रवृत्ति को गंभीरता के साथ अपनाना होगा तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा बनाए गए नियमों का पालन कर अपने दायित्वों का निर्वाह कर राजभाषा हिन्दी के प्रति अपना स्वाभाविक प्रेम दर्शाना होगा। संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. प्रकाश चन्द

थपलियाल ने संस्थान में चलाए जा रहे हिन्दुस्तान पर चर्चा के तहत साहित्य अकादमी पुरस्कृत लेखक आरके नारायण की पुस्तक मालगुडी का चलता पुर्जा पर चर्चा की। हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी का संयोजन दीप्ति कर्माकर ने किया। सीबीआरआई के हिन्दी अधिकारी मेहर सिंह ने बताया कि हिन्दी पखवाड़े के दौरान हिन्दी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता, आशु भाषण प्रतियोगिता, हिन्दी प्रश्नोत्तरी, हिन्दीतर भाषी कर्मियों के लिए हिन्दी लेखन प्रतियोगिता तो

आयोजित की जाएगी है, इसके साथ कर्मियों के बच्चों के लिए भी हिन्दी कविता पाठ तथा भाषण प्रतियोगिता भी आयोजित की जाएगी। हिन्दी पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण 1 अक्टूबर को होगा। इस अवसर पर डॉ. नीरज जैन, डॉ. राजेश वर्मा, डॉ. प्रदीप चौहान, अश्वनीश कुमार, योगी चौधरी, अहमद, धर्म सिंह नेगी, अमन कुमार, धिनीत चौहान आदि उपस्थित रहे।

घर बनाते समय स्थान चयन में बरतें सावधानी

शहरी निकायों में सुरक्षित भवन निर्माण को लेकर कनिष्ठ अभियंताओं को दिए टिप्स

शिमला, 13 सितम्बर (भूविज्ञ): हिमाचल प्रदेश में घर बनाने समय लोगों को स्थान का चयन करने में सावधानियां बरनी चाहिए। इसके लिए जहां स्थान ऐसा होना चाहिए, जहां पर भूस्वतंत्रता व भूमि के धंसने का खतरा न हो।

दिए गए। शुक्रवार को शिमला के प्रदेश सचिवालय में शहरी विकास विभाग तथा टी.सी.पी. के तहत आने वाले अभियंताओं के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का आयोजन हिमाचल प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एच.पी.एम्.डी.एम्.ए.) द्वारा किया गया, जिससे अत्यंत निर्देशक एवं एक्स-ऑफिशियो विशेष सचिव राज्य आपदा प्रबंधन डी.सी. राणा ने की। इस मौके पर सी.डी.आर.आई. रुड़की के मुख्य वैज्ञानिक अजय चौधरी और एस.के. नेगी ने अभियंताओं को सुरक्षित भवन निर्माण को लेकर टिप्स दिए। उन्होंने कहा कि घर बनाने समय लोकेशन का

ध्यान रखना होगा। इसके लिए ऐसे स्थान पर भूमि का चयन किया जाए, जहां पर भूस्वतंत्रता का खतरा न हो तथा वह धंसने वाली भूमि न हो। साथ ही इस बात का भी ध्यान रखा जाए कि नदी-नालों के समीप भवन निर्माण न किया जाए। साथ ही भवन भूकंपरोधी कैसे बनाए जाएं, इसकी भी कार्यशाला में जानकारी दी गई। अब कार्यशाला में भाग लेने वाले अभियंता अपने अपने क्षेत्र में निर्माण कार्य से जुड़े लोगों तथा स्थानीय जनप्रतिनिधियों को जागरूक करेंगे। कार्यशाला में डॉक्टर एंड कंट्रोल प्लानिंग (टी.सी.पी.) और शहरी विकास (यू.डी.) विभाग के 61 शहरी स्थानीय निकायों के



शिमला : राज्य स्तरीय कार्यशाला में भाग लेते शहरी विकास और एच एवं ग्राम नियोजन विभाग के इंजीनियरों। (सीएन)

इंजीनियरों ने भाग लिया। अगले माह पूरे प्रदेश में चलनाय जागूकृत अभियान अगले माह यानि अक्टूबर में समर्थ योजना के तहत पूरे प्रदेश में

एक विशेष जागूकृत अभियान चलनाय जाएगा। इसमें शहरी विकास विभाग तथा टी.सी.पी. के आने वाले कनिष्ठ अभियंता व अन्य अभियंता अपने अपने क्षेत्र में लोगों

को जागूकृत करेंगे। ये सुरक्षित भवन निर्माण को लेकर सार्वजनिक प्रतिनिधियों, इंजीनियरों, वास्तुकारों, राजमिस्त्रियों और आम जनता को जागूकृत करेंगे।



CSIR Daily News Bulletin [15-09-2024]

Roorkee institute to retrofit 20 British-era buildings in Shimla

The Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, will undertake retrofitting of the British-era buildings in Shimla district, including the landmark colonial heritage properties, to make these earthquake-resistant. The buildings that will be retrofitted in the first phase include Raj Bhawan, Oak Over, Secretariat, Deputy Commissioner's Office, Superintendent of Police's Office, All India Radio Building and Doordarshan. A two-day workshop was organised by the District Disaster Management Authority (DDMA) here today, which was presided over by Additional District Magistrate (Protocol) Jyoti Rana. There are many old buildings in Shimla district, which need to be retrofitted so that disaster risk can be reduced. In the first phase, 20 old government buildings have been selected for retrofitting in Shimla district. Rana said it was the buildings that cause maximum loss of life during an earthquake, for which we need to make them quake-resistant. Himachal Pradesh falls in the most vulnerable seismic zones four and five, which make these areas highly prone to earthquakes, she added.

Source: Tribuneindia

Science Communication and Dissemination Directorate (SCDD) Council of Scientific and Industrial Research (CSIR) Ministry of Science & Technology, Govt. of India Anusandhan Bhawan, 2 Rafi Marg, New Delhi - 110001 Tel: +91 11 23714249; 23470121

## सचिवालय और राजभवन बनेंगे भूकंप प्रतिरोधक

जागरण संवाददाता, शिमला : शिमला जिला के भवनों को भूकंप प्रतिरोधक बनाने के उद्देश्य से वीरवार को बचत भवन में जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इसकी अध्यक्षता अतिरिक्त जिला देहाधिकारी (प्रोटोकाल) ज्योति राणा ने की। एडीएम ने कहा कि भूकंप के दौरान जीवन को हानि हमारे भवन ही पहुंचाते हैं। भवनों को भूकंप प्रतिरोधक बनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश भूकंप की दृष्टि से सिस्मिक जोन चार व पांच में आता है। इसके चलते यहां पर भूकंप का अत्यधिक खतरा बना रहता है। जिला शिमला में काको सारे पुराने भवन हैं। इनकी रेट्रोफिटिंग करना आवश्यक है ताकि आपदा जोखिम में कमी लाई जा सके। सीएम आवास, सचिवालय सहित राजभवन की रेट्रोफिटिंग केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) करेगा।

शिमला में वीरवार को आयोजित भूकंप प्रतिरोधक भवन निर्माण की दो दिवसीय कार्यशाला में उपस्थित अधिकारी व अन्य

भूकंप प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए सीबीआरआई करेगा काम शिमला में पहले चरण में 20 सरकारी भवनों का चयन

इसके तहत पहले चरण में 20 सरकारी भवनों का चयन किया गया है। इसमें राजभवन, ओक ओवर, हिमाचल प्रदेश सचिवालय, उपायुक्त कार्यालय, पुलिस अशिक्षक कार्यालय, आल इंडिया रेडियो बिल्डिंग एवं

दूरदर्शन बिल्डिंग, रोहडू उपमंडल के अंतर्गत उपमंडल देहाधिकारी कार्यालय भवन, तहसील कार्यालय चिड़गांव, संयुक्त कार्यालय कॉलेक्स चिड़गांव, पुराना भवन नागरिक अस्पताल रोहडू एवं राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला भवन रोहडू, जुबबल उपमंडल के अंतर्गत नागरिक अस्पताल जुबबल, तहसील कार्यालय जुबबल, पुलिस स्टेशन जुबबल तथा राजकीय (छात्र) वरिष्ठ माध्यमिक

पाठशाला जुबबल, कोटखाई उपमंडल के अंतर्गत राजकीय (छात्र) वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला कोटखाई, तहसील कार्यालय कोटखाई एवं पुलिस स्टेशन कोटखाई तथा कुपची उपमंडल के अंतर्गत सीएससी कुपची के भवन प्रस्तावित हैं। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की से चीफ सॉल्यूटिड एस्क नेगी एवं सॉल्यूटिड आशीष कपूर विषय विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित हुए।

A team of 30 S&T staff members for Survey (Risk Assessment of Houses Under NDMA, New Delhi Project)

## ददाहू के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में घरों का रिस्क आकलन सर्वेक्षण किया

### सी.बी.आर.आई. रुड़की के वैज्ञानिकों और तकनीकी टीम ने किया सर्वेक्षण

नाहन, 11 सितम्बर (चंद्र) : जिला सिरमौर के नाहन, पच्छाद व पांवटा साहिब उपमंडल क्षेत्रों में भूकंप, बाढ़ आदि आपदाओं के मद्देनजर राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, नई दिल्ली की अधिकृत परियोजना अनुसार लगभग 2000-2200 घरों का रिस्क आकलन सर्वेक्षण कार्य आरंभ हो चुका है। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सी.बी.आर.आई.) रुड़की उत्तराखण्ड से लगभग 30 सदस्यों में वैज्ञानिक एवं अन्य तकनीकी स्टाफ की टीम द्वारा यह सर्वेक्षण किया जा रहा है।

बुधवार को टीम ने नाहन उपमंडल के ददाहू के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के करीब 1 हजार घरों के सर्वेक्षण का कार्य किया। इस सर्वेक्षण में सिरमौर जिला के स्थानीय



नाहन : असुरक्षित भवन का सर्वेक्षण करने पहुंची सी.बी.आर.आई. रुड़की की टीम व (नीचे) रिस्क आकलन करते हुए। (अक्षय)

अभियंताओं, पंचायत प्रतिनिधियों, राजस्व अधिकारियों, खंड विकास अभियंताओं एवं अन्य स्टाफ द्वारा सहायता की जा रही है। टीम ऐसे असुरक्षित भवनों को भी चिन्हित कर रही है जोकि भूकंप एवं भूस्खलन के कारण अत्यधिक संवेदनशील एवं कमजोर हैं।

जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण सिरमौर डी.सी. कार्यालय नाहन के प्रभारी राजन कुमार शर्मा ने बताया कि सिरमौर जिला के नाहन, पांवटा साहिब और पच्छाद उपमंडल के करीब 2200 घरों

का रिस्क आकलन सर्वेक्षण किया जा रहा है। बुधवार को ददाहू में करीब 1 हजार घरों का रिस्क आकलन सर्वे टीम द्वारा किया गया।







**CSIR-Central Building Research Institute  
Roorkee (Uttarakhand)  
Scientists and Students Interaction Program  
10<sup>th</sup> September, 2024**



### स्मार्ट प्रौद्योगिकी पर विचार साझा किए

रुड़की। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में जिज्ञासा पहल के तहत वैज्ञानिक और छात्रों के बीच एक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसका विषय स्मार्ट प्रौद्योगिकी का भविष्य रोबोटिक एवं आईओटी रहा।

कार्यक्रम में केंद्रीय विद्यालय एक के करीब 150 छात्रों और 10 संकाय सदस्यों ने हिस्सा लिया। संवाद कार्यक्रम में छात्रों को रोबोटिक और आईओटी जैसी उभरती हुई स्मार्ट तकनीकों के बारे में बताया गया। कार्यक्रम में वैज्ञानिक डॉ. रविंद्र सिंह बिष्ट, चंद्रभान पटेल, मुख्य वैज्ञानिक एआर एसके नेगी, डॉ. ताबिश आलम, आशीष पिप्पल, डॉ. नवीन निशांत, गुंजन जोशी, प्राची ढींगिया, पूजा, नमिता शाह, अमजद, विकास और महेश आदि मौजूद रहे।



# Technology Transfer Meeting with Laghu Udyog Bharati (LUB)

## आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए नई तकनीक अपनाएं उद्यमी

### 100 दिन-100 प्रौद्योगिकी पर सेमिनार आयोजित

रुड़की, 4 सितम्बर (अभिनव) : सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की, भारतीय पेट्रोलियम संस्थान देहरादून तथा लघु उद्योग भारती ने एक दिवसीय औद्योगिक सेमिनार '100 दिन-100 प्रौद्योगिकी' का आयोजन किया। सेमिनार का उद्देश्य सीबीआरआई और लघु उद्योग भारती मिलकर उद्यमियों को आदान-प्रदान करने, विनयेन केवल उद्योगों का तृण होना, बल्कि समाज और देश के विकास में तेजी भी आयेगी।



सेमिनार में मंचासीन अतिथि।

प्रौद्योगिकियों का अनुसंधान एवं विकास कार्य देश के विकास में योगदान दे रहा है। आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए उद्यमियों को तकनीक अपनाना।

लघु उद्योग भारती के सचिव ओम प्रकाश गुप्ता ने कहा कि सीबीआरआई रुड़की, भारतीय पेट्रोलियम संस्थान देहरादून तथा लघु उद्योग भारती का यह संयुक्त प्रयास देश के विकास में गैल का पत्थर साबित होगा। सीएसआईआर-आईआरआई देहरादून के डा. अनुल रंजन ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर

योगेशभाईआर मुरालधर के वैज्ञानिक डा. महेश कुमार ने सीएसआईआर के '100 दिन-100 प्रौद्योगिकी' के संकल्प के बारे में जानकारी दी। पीबीडी समूह के प्रमुख डा. डीपी कानुंगो ने कहा कि यह सेमिनार सभी उद्यमियों को समस्याओं और अपेक्षाओं का समाधान देने में सहायता कर सकता है। सेमिनार का संयोजन निरंजन कुमार सैनी ने किया।



सेमिनार में अतिथि को सम्मानित करते लघु उद्योग भारती के पदाधिकारी।

पदाेश कार्यकारी सदस्य राजेश जाधववाल, प्रो. प्रमोद प्रमोद रावता, प्रिंसिपल पीपुल्स, पोप्टर, उमेश नाथ, देहरादून छापील जिला अध्यक्ष रविन्द्र चट्ट, निगुल चक्रवर्ती, उमेश मोहन, योगेश चन्द, हरिद्वार/रिक्ता अध्यक्ष मनोज पुढीर, अमित चण्डी, दिव्ये रेट्टे सैक्रेटरी आरती सारल, रीबीआरआई से नवीन सैनी, डॉ. डीपी कानुंगो, भाषण

लघु उद्योग प्रमोद के प्रदेश संयोजक राहुल देव बंद, चन्दन शर्मा, पंकज गोपाल, अश्विनी शर्मा, उमेशकुमार, अशोक शुक्ल, राजकुमार शर्मा, निरंजन गुर्ग, नीरव खारवा, रविचंद्र शर्मा, एमके नेगी, डा. अजय चौरसिया, डा. पीसी शर्मा, डा. एमके पाणिगढ़ी, प्रो. एमके सिंह, हिम गुप्ता, राजेश शर्मा, अमित कुश आदि मौजूद रहे।



## 'तकनीकों का होगा आदान-प्रदान' सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में हुआ औद्योगिक सेमिनार

माई सिटी रिपोर्टर

रुड़की। सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की, भारतीय पेट्रोलियम संस्थान देहरादून और लघु उद्योग भारती उत्तराखंड की ओर से औद्योगिक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार का आयोजन '100 दिन-100 प्रौद्योगिकी' के लिए किया गया। इससे सीबीआरआई और लघु उद्योग भारती मिलकर उन तकनीकों का आदान-प्रदान करेंगे। इनसे न केवल उद्योगों को लाभ होगा बल्कि समाज और देश के विकास में तेजी भी आएगी।



रुड़की स्थित सीबीआरआई में आयोजित सेमिनार में उपस्थित वैज्ञानिकों और संस्थान

लघु उद्योग भारती देता के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है: प्रो. कुमार

का यह संयुक्त प्रयास देश के विकास में गैल का पत्थर साबित होगा। सीएसआईआर-आईआरआई देहरादून से पहुंचे डॉ. अनुल रंजन ने भी अपने विचार रखे। सीएसआईआर मध्यप्रदेश के वैज्ञानिक डॉ. महेश कुमार ने सीएसआईआर के '100 दिन-100 प्रौद्योगिकी' के संकल्प के बारे में जानकारी दी।

पीबीडी समूह के प्रमुख डॉ. डीपी कानुंगो ने कहा कि हमें विचार्य है कि आज का सेमिनार सभी उद्यमियों को समस्याओं और अपेक्षाओं का समाधान देने में सहायता कर सकता है। सेमिनार का संयोजन निरंजन कुमार सैनी ने किया। इस अवसर पर डॉ. हरपाल सिंह, डॉ. मिश्रकी मेकाना दिलबेहा, प्रो. एमके सिंह, डॉ. निरंजन शर्मा, डॉ. रविन्द्र सिंह बिष्ट, डॉ. शिवा चिन्दरम, डॉ. तनिश आलम, डॉ. देवुदत्त घोष आदि सम्मिलित रहे।

देहरादून, हरिद्वार, रुड़की, ऋषिकेश, एवं अन्य

newsdesk@motherlandvoice.org editor@motherlandvoice.org

उत्तराखंड

## एक दिवसीय औद्योगिक सेमिनार में किया उद्योगों पर विचार

मदरलैंड समादाता

रुड़की। सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की, भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून तथा लघु उद्योग भारती उत्तराखंड के संयुक्त प्रयास से एक दिवसीय औद्योगिक सेमिनार का आयोजन किया गया। 100 दिन-100 प्रौद्योगिकी को ध्यान में रखकर सेमिनार का आयोजन आयोजित किया गया। सेमिनार का उद्देश्य सीबीआरआई और लघु उद्योग भारती मिलकर उन तकनीकों का आदान-प्रदान करना है, जिससे उद्योग, समाज और देश के विकास में तेजी आएगी।



लघु उद्योग भारती के पदाधिकारी

सेमिनार में सीबीआरआई रुड़की, भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून तथा लघु उद्योग भारती देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है। दूसरी ओर सीएसआईआर सीबीआरआई रुड़की का उद्देश्य सीबीआरआई और लघु उद्योग भारती मिलकर उन तकनीकों का आदान-प्रदान करने में सहायता देना है। इस अवसर पर लघु उद्योग भारती के सचिव ओम प्रकाश

गुप्ता ने कहा कि सीबीआरआई रुड़की, भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून तथा लघु उद्योग भारती, उत्तराखंड का यह संयुक्त प्रयास देश के विकास में एक मौल्य का पत्थर साबित होगा। सीएसआईआर-आईआरआई देहरादून से पहुंचे डॉ. अनुल रंजन ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर सीएसआईआर

मध्यप्रदेश के वैज्ञानिक डॉ. महेश कुमार ने अपने संबोधन में सीएसआईआर के 100 दिन, 100 प्रौद्योगिकी के संकल्प के बारे में जानकारी दी। पीबीडी समूह के प्रमुख डॉ. डीपी कानुंगो ने कहा कि हमें विकास में तेजी आयेगी। सेमिनार सभी उद्यमियों को समस्याओं और अपेक्षाओं का समाधान देने में सहायता देना है।

प्राथम्य में भी उद्योगों को अपेक्षाओं के अनुसार प्रौद्योगिकी विकसित करने के लिए व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क करेंगे। सेमिनार का संयोजन निरंजन कुमार सैनी ने किया। सीएसआईआर और लघु उद्योग भारती मिलकर उद्यमियों को तकनीक अपनाना। सेमिनार का उद्देश्य सीबीआरआई और लघु उद्योग भारती मिलकर उद्यमियों को आदान-प्रदान करने, विनयेन केवल उद्योगों का तृण होना, बल्कि समाज और देश के विकास में तेजी भी आयेगी।

## नई दिल्ली में हुआ एक सप्ताह-एक थीम कार्यक्रम का आयोजन

» मद्रालैंड संवाददाता

रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली तथा सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की द्वारा संयुक्त रूप से इंडिया हेबिटाट सेंटर, नई दिल्ली में एक सप्ताह-एक थीम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का थीम 'सिविल, इंफ्रास्ट्रक्चर और इंजीनियरिंग' रहा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रविंद्र कुमार गोयल, प्रधान कार्यकारी निदेशक, पुल, भारतीय रेलवे ने कहा कि हम जो भी अनुसंधान करें, वे चिरस्थायी, ऊर्जा दक्ष तथा लागत प्रभावी हों, जो समाज को प्रत्यक्ष रूप में लाभ दें। समारोह के गेस्ट आफ ऑनर यूके भट्टाचार्य, पूर्व निदेशक, एनटीपीसी लि. तथा अध्यक्ष, अनुसंधान परिषद,

सीएसआईआर-एसईआरसी ने कहा कि विकसित भारत-2047 को लक्ष्य करते हुए अनुसंधान करने की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। सीएसआईआर-एसईआरसी, चेन्नई के निदेशक एवं सीआईई के थीम निदेशक डॉ. एन. आनन्दवल्ली ने स्वागत भाषण दिया। आयोजक सीएसआईआर के निदेशक प्रो. मनोरंजन परिदा ने हानन वीक-वन थीम का बारे में जानकारी दी। सीएसआईआर, भोपाल के निदेशक डॉ. अचनीश कुमार श्रीवास्तव, सीएसआईआर-सीएमआईआर, दुर्गापुर के निदेशक डॉ. नरेश चन्द्र मुर्मू और सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने भी इस दौरान सम्बोधित किया। कार्यक्रम का उद्देश्य सिविल इंजीनियरी के क्षेत्र में शोध कार्य में

लगी सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालों को एक मंच पर लाना था। कार्यक्रम में सीआरआरआई, नई दिल्ली; सीबीआरआई, रुड़की; एएमपीआरआई, भोपाल; एसईआरसी, चेन्नई तथा सीएमआईआरआई, दुर्गापुर ने शिरकत की। इस अवसर पर सीबीआरआई रुड़की के डॉ. अजय चैरसिया, मुख्य वैज्ञानिक ने भवन भौतिकी और सामग्री निर्माण रसायन समेत पर, सीएसआईआर-सीआरआरआई, नई दिल्ली के डॉ. एमल्लू मधु, मुख्य वैज्ञानिक ने मोबिलिटी इंफ्रास्ट्रक्चर और प्लानिंग पर, सीएसआईआर-एएमपीआरआई, भोपाल के डॉ. प्रदीप राजन, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक ने ऑटोमेशन और रोबोटिक्स पर, डॉ. पी. अशोकन ने अपशिष्ट से सम्पदा, सीएसआईआर-एसईआरसी चेन्नई के डॉ. एस. सतर्षि, मुख्य वैज्ञानिक ने

संरचना निगरानी और उसका जीवन विस्तार पर तथा सीएसआईआर-एसईआरसी, चेन्नई के डी. पी. हरिकृष्णा मुख्य वैज्ञानिक ने आपदा न्यूनीकरण संरचना विषय पर एएमपीआरआई, भोपाल के निदेशक डॉ. अचनीश कुमार श्रीवास्तव ने मुख्य अतिथि रविंद्र कुमार गोयल, विशिष्ट अतिथि, गेस्ट आफ ऑनर यूके भट्टाचार्य ने प्रयोगशालाओं के निदेशकों, वक्ताओं, वैज्ञानिकों का धन्यवाद किया। आज ही सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की ने दिल्ली में सीबीआरआई उद्योग समागम का आयोजन किया गया। जिसमें सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम के मोडरेटर प्रो. आर. प्रदीप कुमार और संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक, डॉ. अजय

चैरसिया ने संरचनात्मक रेट्रोफिटिंग, स्वास्थ्य निगरानी और जलवायु-लचीले भवन भारतीय परिदृश्य पर पैनल चर्चा की। उद्योगों प्रतिनिधियों ने कहा कि उद्योगों की अपेक्षाओं और आवश्यकताओं के अनुरूप काम करने पर बल दिया तथा कोड ऑफ कंडक्ट को अद्यतन करने पर भी जोर दिया। डॉ. एसके सिंह ने कहा कि हम उद्योगों की आवश्यकताओं पर ध्यान देते हुए कार्य करेंगे। डॉ. हरपाल सिंह ने अग्नि अनुसंधान कार्यक्षेत्र पर चर्चा की। डॉ. पीसी थपलियाल ने धन्यवाद व्यक्त किया। इस अवसर पर डॉ. हरपाल सिंह, डॉ. डीपी कानुनगो, डॉ. एसके सिंह, नदीम अहमद, डॉ. एसके पाणिगृही, डॉ. गणेश बाबु बालम, डॉ. सोमित्र मैती, डॉ. किशोरा कुलकर्णी, डॉ. शिवा चिदम्बरम, डॉ. चन्दन स्वरूप मीना, डॉ. ताबीश आलम आदि उपस्थित रहे।



**चिरस्थायी, ऊर्जा दक्ष व लागत प्रभावी हों अनुसंधान : रविंद्र**

**Inaugural Program**  
September 3, 2024  
Seminar, IIT Delhi, New Delhi

दिल्ली में सीबीआरआई रुड़की की ओर से आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन अतिथि। संतः संस्थान

रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली एवं सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की की ओर से संयुक्त रूप से इंडिया हेबिटाट सेंटर, नई दिल्ली में 'सिविल, इंफ्रास्ट्रक्चर और इंजीनियरिंग' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। एक सप्ताह तक यह कार्यक्रम चलेंगा। इसमें सिविल, इंफ्रास्ट्रक्चर और इंजीनियरिंग पर चर्चा की गई।

कार्यक्रम में भारतीय रेलवे के प्रधान कार्यकारी निदेशक रविंद्र कुमार गोयल बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए। उन्होंने कहा कि हम जो भी अनुसंधान करें, वे चिरस्थायी, ऊर्जा दक्ष और लागत प्रभावी हों, जो समाज को प्रत्यक्ष रूप में लाभ दें। समारोह के गेस्ट

ऑफ ऑनर एनटीपीसी लिमिटेड के पूर्व निदेशक यूके भट्टाचार्य रहे। उन्होंने विकसित भारत-2047 को लक्ष्य करते हुए अनुसंधान करने की आवश्यकता पर बल दिया। इस मौके पर सीएसआईआर-एसईआरसी, चेन्नई के निदेशक एवं सीआईई के थीम निदेशक डॉ. एन. आनन्दवल्ली, सीएसआईआर-सीआरआरआई के निदेशक प्रो. मनोरंजन परिदा द्वारा 'वन वीक-वन थीम' के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। सीएसआईआर-एएमपीआरआई, भोपाल के निदेशक डॉ. अचनीश कुमार श्रीवास्तव, सीएसआईआर-सीएमआईआरआई, दुर्गापुर के निदेशक डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू और सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने भी विचार रखे। संवाद



**हिन्दुस्तान**  
www.livehindustan.com

**विकसित भारत का लक्ष्य लेकर करें अनुसंधान कार्य: भट्टाचार्य**

रुड़की, संवाददाता। केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली (सीएसआईआर) और केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की की ओर से संयुक्त रूप से इंडिया हेबिटाट सेंटर नई दिल्ली में एक सप्ताह-एक थीम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का थीम 'सिविल, इंफ्रास्ट्रक्चर और इंजीनियरिंग' रहा।

कार्यक्रम में भारतीय रेलवे पुल के कार्यकारी निदेशक रविंद्र कुमार गोयल मुख्य अतिथि रहे। मुख्य अतिथि ने कहा कि हम जो भी अनुसंधान करें वे स्थायी, ऊर्जा दक्ष और लागत प्रभावी हों। जो समाज को प्रत्यक्ष रूप में लाभ दें। समारोह के गेस्ट ऑफ ऑनर एनटीपीसी के पूर्व निदेशक यूके भट्टाचार्य ने कहा कि विकसित भारत-2047 को लक्ष्य करते हुए अनुसंधान करने की आवश्यकता पर बल दिया।

सीएसआईआर-एसईआरसी चेन्नई के निदेशक और सीआईई के थीम निदेशक डॉ. एन. आनन्दवल्ली ने स्वागत भाषण दिया। आयोजक सीएसआईआर-सीआरआरआई के निदेशक प्रो. मनोरंजन परिदा की ओर से 'वन वीक-वन थीम' के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का उद्देश्य सिविल इंजीनियरी के क्षेत्र में शोध

**उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुसार करें काम: प्रो. प्रदीप**

सीबीआरआई रुड़की ने दिल्ली में सीबीआरआई-उद्योग समागम का आयोजन किया गया। जिसमें सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने स्वागत भाषण दिया। उद्योगों प्रतिनिधियों ने उद्योगों की अपेक्षाओं और आवश्यकताओं के अनुरूप काम करने पर बल दिया। कोड ऑफ कंडक्ट को अद्यतन करने पर भी जोर दिया। डॉ. एसके सिंह ने कहा कि हम उद्योगों की आवश्यकताओं पर ध्यान देते हुए कार्य करेंगे। डॉ. हरपाल सिंह ने अग्नि अनुसंधान कार्यक्षेत्र पर चर्चा की। डॉ. पीसी थपलियाल ने धन्यवाद व्यक्त किया। इस अवसर पर डॉ. हरपाल सिंह, डॉ. डीपी कानुनगो, डॉ. एसके सिंह, नदीम अहमद, डॉ. पाणिगृही, नितीश सी. डॉ. बालम, डॉ. मैती, डॉ. कुलकर्णी, डॉ. चिदम्बरम, डॉ. मीना, डॉ. ताबीश आलम आदि मौजूद रहे।

कार्य में लगी सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालों को एक मंच पर लाना था। सीबीआरआई रुड़की के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. अजय चैरसिया ने भवन भौतिकी और सामग्री पर व्याख्यान दिया।

# Post-Disaster Needs Assessment team begins study on Chooralmala landslides

Published - August 26, 2024 09:36 pm IST - KALPETTA

THE HINDU BUREAU



The Post-Disaster Needs Assessment team along with Forest Minister A.K. Saseendran visiting the landslide-hit area at Chooralmala in Wayanad on August 26. | Photo Credit: Special Arrangement

A comprehensive and scientific study on the recent landslides at Chooralmala in Wayanad was initiated by the Post-Disaster Needs Assessment (PDNA) team led by R. Pradeep Kumar, Director of the Central Building Research Institute.

Addressing a meeting of officials from the the Kerala State Disaster Management Authority (KSDMA), Wayanad district administration, and people's representatives on August 26



A study team of the National Disaster Management Authority (NDMA) visited the landslip-hit areas in Vilangad in Kozhikode on Saturday (August 31, 2024). The team that had earlier assessed the situation in Wayanad was in Vilangad upon the request of MLA E.K. Vijayan. The four-member team comprising R. Pradeep Kumar, Director of Scientists D.P. Kanungo, Ajay Chaurasia and Member Secretary of Kerala State Disaster Management Authority Shekhar. L. Krurikose visited areas such as Vayad, Panniyeri, Malayangadu and Vilangad town, some of the worst hit areas in the landslip that took place on July 30, 2024. They spoke to survivors and collected data from the local authorities. A Post-Disaster Needs Assessment (PDNA) report will be submitted to the Central Government within two weeks, comprising the information gathered from Chooralmala, Mundakkai and Vilangad. The team was accompanied by MLA E.K. Vijayan and representatives of Vanimal Grama Panchayat.

The Tamil Nadu government has inked a pact with US-based Ohmium to set up a new green hydrogen and electrolyser gigafactory in Chengalpattu district of the state. The Memorandum of Understanding (MoU) was signed in the presence of Chief Minister M K Stalin in San Francisco, on the second day of the CM's US trip, on Saturday. State Minister for Industries, Investment Promotions and Commerce TRB Rajaa and Ohmium Co-Founder and CEO Arne Ballantine were present. Ohmium's proposed Chengalpattu plant will be set up at an estimated cost of Rs 400 crore. The plant is expected to generate 500 jobs, a state government release said. Green hydrogen, a clean energy source that only emits water vapour and leaves no residue in the air, unlike coal and oil, is expected to enable India's transition to clean energy. Ohmium has existing R&D partnerships with the IIT Madras Research Park (IITMRP) and the ICSIR- in Karaikudi.

-- Team SCDD

Science Communication and Dissemination  
Directorate  
(SCDD)  
Council of Scientific and Industrial Research (CSIR)  
Ministry of Science & Technology, Govt. of India  
Anusandhan Bhawan, 2 Rafi Marg, New Delhi - 110001  
Tel: +91 11 23714249: 23470121

## Gurgaon: More trouble in Paradiso, 7th tower at Chintels condo declared unsafe

Rao Jaswant Singh / TNN / raojaswantsingh / Updated: Aug 21, 2024, 07:05 IST

CBRI deemed Tower C of Chintels Paradiso uninhabitable due to severe structural issues, similar to six other towers previously declared unsafe after a tragic collapse in 2022. The institute identified high chloride content and substandard concrete as the main causes. Demolition has been advised for safety.



GURGAON: The Central Building Research Institute (CBRI) has declared Tower C of Chintels Paradiso unsafe for habitation, following a structural analysis.

This is the seventh tower in the condominium of nine towers - where a vertical collapse of living rooms killed two residents in Feb 2022 - to be declared unfit.

### 60 FAMILIES LIVING IN TOWER C

**9 towers in Chintels Paradiso**  
 > D, E, F, G and H (phase 1) and A, B, C, J (phase 2)

**7 towers declared unsafe**  
 By IIT Delhi, dist admin | D, E, F, G, H and J (total 348 flats)  
 By CBRI | C (64 flats)

**What CBRI report says**  
**Unsafe for habitation** | Tower C is declared unsafe for habitation due to severe structural deficiencies, including extensive corrosion of reinforcement in almost all structural elements, primarily caused by high chloride content in concrete  
 > Use of poor-quality concrete in construction, which contributed to increased carbonation and accelerated corrosion

**High cost of repairs** | The cost of necessary repairs, retrofitting, and rehabilitation would exceed 50% of the original construction cost, making retrofitting economically unfeasible

**Razing recommended** | Demolition of Tower C is recommended due to widespread structural failures and high maintenance requirements

**60 families living in Tower C**

CBRI's findings uncovered extensive structural deficiencies, primarily due to severe corrosion caused by high chloride content and substandard concrete.

## Gurugram News: जब तक सात... चिटल्स पराडिसो का सी-टावर भी असुरक्षित घोषित

नोएडा ब्यूरो  
 Updated Wed, 21 Aug 2024 04:35 AM IST



सीएसआईआर-सीबीआरआई की रिपोर्ट में रहने योग्य नहीं है सी-टावर

₹10 Lakh C Games & Puzzles Real Estate India

## Gurugram real estate news: Audit declares 7th tower at Chintels Paradiso as unsafe

By Abhishek Behl

Aug 21, 2024 06:22 AM IST

The structural audit, undertaken by experts from the Central Building Research Institute (CBRI), was commissioned by Chintels India Ltd.



Tower C of Chintels Paradiso, which has been deemed unsafe by experts of CBRI, who conducted the structural audit of the building at Sector-109 near Dwarka Expressway, in Gurugram. (HT PHOTO)

A structural audit of the Chintels Paradiso condominium at Gurugram Sector 109 has deemed a seventh tower in the complex – Tower C – to be unsafe, and has recommended that it be demolished, people aware of the development said on Tuesday.

10:02

india.indiatimes.com



Now Playing  
 Badlapur: Mob Pelts School, Storms Railway Tracks Over Abuse Of Two Kids

ciencies, including extensive corrosion of reinforcement in almost all structural elements, primarily caused by high chloride content in concrete  
 > Use of poor-quality concrete in construction, which contributed to increased carbonation and accelerated corrosion

**High cost of repairs** | The cost of necessary repairs, retrofitting, and rehabilitation would exceed 50% of the original construction cost, making retrofitting economically unfeasible

**Razing recommended** | Demolition of Tower C is recommended due to widespread structural failures and high maintenance requirements

**60 families living in Tower C**

CBRI's findings uncovered extensive structural deficiencies, primarily due to severe corrosion caused by high chloride content and substandard concrete.



### सीबीआरआई ने हरी प्रोजेक्ट को किया लांच

सीएसआईआर की महानिदेशिका डॉ. एन. कलैसेल्वी ने सीबीआरआई में हरी का उद्घाटन किया। कार्यक्रम में सीआरबी की आधारशिला रखी गई। उन्होंने उद्घाटन करते-करते के लिए उर्जा कुशल समाधानों की सफलता की सीबीआरआई...



Newsrap • बुधवार, 14 अगस्त

Fri, 16 Aug 2024 06:45 PM



इन्हें पसंद करें

सीबीआरआई ने हरी प्रोजेक्ट को किया लांच  
 सीएसआईआर की महानिदेशिका डॉ. एन. कलैसेल्वी ने सीबीआरआई में हरी का उद्घाटन किया। कार्यक्रम में सीआरबी की आधारशिला  
[www.livehindustan.com](http://www.livehindustan.com)

<https://www.livehindustan.com/uttarakhand/roorki/story-csir-director-inaugurates-high-altitude-regions-initiative-at-cbri-highlights-climate-resilient-buildings-201723814110271.html>

प्रो. आर प्रदीप कुमार ने हरी प्रोजेक्ट कि चुनौतियों और सीबीआरआई की क्षमता के बारे में बताया। कहा कि यह पहल न केवल उच्च-उंचाई वाले अनुसंधान में तकनीकी प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। बल्कि भारत की रणनीतिक और सामाजिक भलाई में भी एक महत्वपूर्ण योगदान है। सीबीआरआई के वैज्ञानिकों द्वारा हरी पर एक विस्तृत प्रस्तुति दी गई। जिसमें उन्होंने तेह सप्ताह के लोगों द्वारा जिन वर्षमान चुनौतियों का सामना किया जा रहा है उनपर विशेष चर्चा की। इसमें ड्राई टॉपलेट्स, पानी की कमी, वॉटर डीटर की इन्फ्लिक्सी में कमी के कारण ज्यादा ऊर्जा का प्रयोग और उंचाई वाले क्षेत्रों में बिजली की कम उपलब्धता जैसे मुद्दों पर चर्चा की गई। डॉ. नवीन, डॉ. शिवा, डॉ. मैथी, डॉ. चन्दन, निर्मल, डॉ. नागेश, डॉ. किशोर ने प्रोजेक्ट की विस्तृत जानकारी दी। वैज्ञानिक एसके मैगी द्वारा धन्यवाद प्रस्तुत किया गया। उन्होंने यह आश्वासन दिया कि विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। इस अवसर पर डॉ. कानून्गो, डॉ. हरपाल, डॉ. धपलियाल, नदीम, डॉ. लीना, डॉ. अरोड़ा, डॉ. शोभा, डॉ. एके सिंह, अविनाश, परवेश, डॉ. जीशान, डॉ. गणेश, डॉ. आशीष, कुमुद सिंह, आदि मौजूद रहे।

# सूर्य तिलक अभिनंदन समारोह का आयोजन

## ■ भारत विकास परिषद अविरल गंगा शाखा रुड़की ने किया कार्यक्रम

रुड़की, 11 अगस्त (अनिल) : भारत विकास परिषद अविरल गंगा शाखा रुड़की ने त्योहारों का महाउत्सव मनाया और सूर्य तिलक अभिनंदन समारोह का भी आयोजन किया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण सीबीआरआई वैज्ञानिकों द्वारा भगवान राम की प्रतिमा को सूर्य तिलक का पीपीडी के माध्यम से प्रस्तुति देना रहा।

नगर के एक मोटल में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सीबीआरआई निदेशक आर प्रदीप कुमार ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। परिषद की अध्यक्ष प्रीति अग्रवाल ने सभी सदस्यों और अतिथियों का



सम्मानित किए गए सीबीआरआई के वैज्ञानिक।

स्वागत कर कार्यक्रम की शुरुआत की। इस अवसर पर सावन मास के त्योहार शिवरात्रि, तीज, 15 अगस्त, राखी, जन्माष्टमी को नृत्य और नाटिका के द्वारा इनकी महिमा और महत्व को दर्शाया गया।

शाखा ने इस वर्ष से शुरू हुआ प्रथम

अविरल रमेश चंद्र मित्तल उत्कृष्ट अनुसंधान सम्मान मुख्य अतिथि सीबीआरआई रुड़की के निदेशक प्रो आर प्रदीप कुमार एवं टीम सदस्यों वी. चक्रधर, डॉ देवदत्ता घोष, डा रविंद्र, डा सूरज कुमार, ई कौतिलाल, ईदिनेश कुमार और समीर को दिया। इन्होंने

अयोध्या में नवनिर्मित राम मंदिर में भगवान राम की मूर्ति के माथे पर सूर्य की रोशनी से तिलक लगाया था। इस अवसर पर वैज्ञानिकों ने अपने द्वारा लगाए सूर्य तिलक की पीपीडी के माध्यम से प्रस्तुति दी और बताया इस कार्य के लिए अयोध्या में कितनी मुश्किल स्थितियों का सामना करना पड़ा। शाखा संरक्षक डा. सत्येंद्र मित्तल ने प्रोफेसर आर प्रदीप सम्मान पत्र, शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया।

मंच का संचालन महिला संयोजिका विमलेश गिरी और डा. संगीता सिंह ने किया। इस अवसर पर प्रदीप वधावन, संजय कालरा, अनिल महेश्वरी, नीरज मित्तल, डा. संगीता सिंह, पीयूष गर्ग, संदीप गुप्ता, मुकुल गर्ग, राधेश्याम गुप्ता, विजय कुमार, संजय, भारत, प्रदीप अग्रवाल, ऋषिपाल सैनी, दीपाली, ममता आदि उपस्थित रहे।



इलैक्ट्रॉनिक यंत्र ल जान का अनुमान नहा दम।

विस्तार से जानकारी दी। प्रदर्शन हान के लिए कहा। उन्होंने बताया कि आरओ टबल ल गड जाएंगे। इस दौरान

## उद्घाटन

नैनो विज्ञान और प्रौद्योगिकी में नवीनतम प्रगति को प्रदर्शित करना है उद्देश्य

# सीबीआरआई में दो दिवसीय 'नैनो जत्था' का शुभारंभ

रुड़की, 12 जुलाई (अनिल) : सीएसआईआर-सीबीआरआई में सेंटर फॉर नैनो एंड सॉफ्ट मैटर साइंसेज (सीईएनएस), बेंगलूरु के सहयोग से 'नैनो जत्था' नामक महत्वपूर्ण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। 'नैनो जत्था' के आयोजन का उद्देश्य नैनो विज्ञान और प्रौद्योगिकी में नवीनतम प्रगति को प्रदर्शित करना है।

सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने रवींद्रनाथ टैगोर ऑडिटोरियम में उद्घाटन सत्र का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ किया। इस अवसर पर संस्थान निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि नैनो प्रौद्योगिकी के माध्यम से बहुत सी समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। हमारा संस्थान विभिन्न प्रौद्योगिकियों के अनुसंधान एवं विकास

में नैनो प्रौद्योगिकी का उपयोग कर रहा है। प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि नैनो प्रौद्योगिकी में दुनिया को बदलने की ताकत है। प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने सेंटर फॉर नैनो एंड सॉफ्ट मैटर साइंसेज (सीईएनएस), बेंगलूरु के निदेशक प्रो. बीएलवी प्रसाद का इस नैनो जत्था के आयोजन में नोडल अधिकारी की महत्वपूर्ण भूमिका की प्रशंसा की।

सेंटर फॉर नैनो एंड सॉफ्ट मैटर साइंसेज (सीईएनएस), बेंगलूरु के डॉ. आशुतोष सिंह ने सीईएनएस के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम के समन्वयक एवं मुख्य वैज्ञानिक डा. एसआर कराडे ने इस दो दिवसीय कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया। कार्यक्रम का संयोजन संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक नदीम अहमद द्वारा



कार्यक्रम में मंचासीन अतिथि। (दोपक)

किया गया और इंजीनियर आशीष पिंपल ने धन्यवाद प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों,

विभिन्न क्षेत्रों के छात्रों, परियोजना स्टार, शोधार्थी सम्मिलित हुए। इस अवसर पर डा. पीसी थपलियाल, डा.

प्रदीप चौहान, सौरभ जैन, डा. ताबीश आलम, सिद्धार्थ सिंह, राजीव शर्मा, मेहर सिंह, समीर आदि उपस्थित रहे।

## सीबीआरआई में शुरू हुआ दो दिवसीय नैनो जत्था कार्यक्रम

» मद्रलैंड संवाददाता

रुड़की। सीएसआईआर-सीबीआरआई में सेंटर फॉर नैनो एंड सॉफ्ट मैटर साइंसेज, बेंगलूरु के सहयोग से हानेनो जत्था नामक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। हानेनो जत्था आयोजन का उद्देश्य नैनो विज्ञान और प्रौद्योगिकी में नवीनतम प्रगति को प्रदर्शित करना है। नैनो जत्था कार्यक्रम का उद्घाटन सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार द्वारा रवींद्रनाथ टैगोर ऑडिटोरियम में किया गया। उद्घाटन सत्र का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। संस्थान निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि नैनो प्रौद्योगिकी के माध्यम से बहुत सी समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। हमारा संस्थान विभिन्न प्रौद्योगिकियों के अनुसंधान एवं विकास में नैनो प्रौद्योगिकी का उपयोग कर रहा है। प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि नैनो प्रौद्योगिकी में दुनिया को बदलने की ताकत है। प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने सेंटर फॉर नैनो एंड सॉफ्ट मैटर साइंसेज, बेंगलूरु के निदेशक प्रो. बी एल वी प्रसाद की नैनो जत्था के आयोजन में नोडल अधिकारी की महत्वपूर्ण भूमिका की प्रशंसा की। सेंटर फॉर नैनो एंड



सॉफ्ट मैटर साइंसेज (सीईएनएस), बेंगलूरु के डॉ. आशुतोष सिंह ने सीईएनएस के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस दो दिवसीय कार्यक्रम के समन्वयक एवं मुख्य वैज्ञानिक डा. एसआर कराडे ने कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया। कार्यक्रम का संयोजन संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक नदीम अहमद द्वारा किया गया। इंजीनियर आशीष पिंपल ने धन्यवाद प्रस्तुत किया। नैनो जत्थे में प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के आकर्षक व्याख्यान, वीडियो शो,

दर्शकों के साथ संवाद सत्र और एक ज्ञानवर्धक प्रदर्शनी शामिल होगी। प्रदर्शनी में लाइव प्रदर्शन होंगे जो नैनो विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों, विभिन्न क्षेत्रों के छात्रों, परियोजना स्टाफ, शोधार्थी शामिल हुए इस अवसर पर डॉ. पीसी थपलियाल, डॉ. प्रदीप चौहान, सौरभ जैन, डॉ. ताबीश आलम, सोजु अलेग्जेंडर, सिद्धार्थ सिंह, राजीव शर्मा, मेहर सिंह, समीर आदि उपस्थित रहे।

# SCIENCE REPORTER

Exploring Science & Technology

[Home](#) [About Us](#) [COVID-19](#) [Features](#) [S&T News](#) [Previous Issues](#) [Competitions](#) [Subscribe](#)

## Highlights

Unveiling the Genius behind Hepatitis C Virus Breakthroughs In Conversation with I

Charles M Rice

## CSIR Initiates the “One Week One Theme” Campaign

Staff



After the successful conduct of the “One Week One Lab” programme by all CSIR laboratories in 2023, Hon’ble Dr Jitendra Singh, the Minister of State (Independent Charge) for Science and Technology and Vice President of CSIR launched the “One Week One Theme” (OWOT) campaign by unveiling its logo on 24 June 2024 at India Habitat Centre, New Delhi. Built on the achievements of the “One Week One Lab”, “One Week One Theme” is the brainchild of Dr Jitendra Singh to bring together the efforts at CSIR labs working on similar themes/projects. This will help reduce the overlapping of work, making the best use of the resources.

The main objective of the “One Week One Theme” programme is to highlight the innovative approaches and technological developments of all CSIR labs. The weeklong activities under OWOT focus on each of the eight themes of CSIR. Over the years, CSIR has undertaken various initiatives to transform laboratory research into marketable, value-added...[read more on NOPR](#)

## Dr. Jitendra Singh Launches “One Week One Theme” (OWOT) Campaign

*Dr. Jitendra Singh on June 24, launched "One Week One Theme" (OWOT) campaign showcasing recent success stories of India in different streams of science and technology.*

Posted by [trilok](#) Published On June 25th, 2024



Union Minister of State (Independent Charge) for Science and Technology, Minister of State (Independent Charge) for Earth Sciences, MoS PMO, Department of Atomic Energy, Department of Space, Personnel, Public Grievances and Pensions **Dr. Jitendra Singh on June 24**, launched “**One Week One Theme**” (OWOT) campaign showcasing recent success stories of India in different streams of science and technology.

### **Aim of the campaign**

Dr. Jitendra Singh said, **Our aim** is to integrate the efforts of all CSIR labs working on similar projects to reduce overlap and optimize resources. ‘One Week One Theme’ initiative under Council for Scientific and Industrial Research (CSIR) aims to make innovation inclusive for all. Pertinent to mention, ‘One week One Theme’ is the brainchild of Minister Dr. Jitendra Singh. ‘OWOT’ is built on the **legacy and success of the ‘One Week One Lab’** (OWOL) initiative started last year. OWOL was also made possible under his guidance.

- The **Science and Technology minister** highlighted the aim and objective behind this initiative is to **create awareness among citizens** about the progress and development in Labs, to benefit them giving them new avenues and opportunities for employment, empowering stakeholders such as **MSMEs, Startups, SHGs, scientists**, researchers by integration and collaboration with Industry.



**CSIR-CBRI Hosts Industry Meet on Sustainable Construction Using C&D Waste**

The Industry Meet organized by CSIR-CBRI emphasized the urgent need for proper coordination, accountability, and awareness in the effective collection, segregation, recycling, and utilization of Construction and Demolition (C&D) wastes, bringing together 75 professionals (government and industry people) to discuss sustainable construction practices and address the challenges posed by India's rapidly growing C&D waste.



The event, held at the India Habitat Center in New Delhi, was graced by esteemed dignitaries including Ar. Rajesh K. Kaushal, Director General of CPWD, as the Chief Guest, and Dr. Sanjay Pant, Deputy Director General of BIS, as the Guest of Honour. In his inaugural address, Ar. Kaushal emphasized the importance of sustainable construction practices that leverage C&D waste, while Dr. Pant highlighted critical standards and regulatory frameworks necessary for sustainable construction, underlining the need for adherence to guidelines for environmental sustainability.

Prof. R. Pradeep Kumar, Director of CSIR-CBRI, welcomed participants and stressed the importance of achieving 100% utilization of C&D waste to foster a circular economy. Dr. D.P. Kanungo provided a comprehensive overview of the meet, outlining its agenda and objectives. The event was coordinated by Prof. S.K. Singh, ensuring smooth execution and engagement of participants.

The sustainable management of C&D waste has become a pressing concern in India due to its large volume, negative environmental and societal impacts. Lack of recycling infrastructure, and inadequate stakeholder coordination. Despite the annual demand of 45,000 - 50,000 million tonnes of aggregates for infrastructure projects (roads, railways, etc.), and the proven quality of recycled C&D materials, India recycles only 1% of its C&D waste, according to the Center for Science and Environment.



In response to this challenge, the Government of India introduced the Construction and Demolition Waste Management Rules in 2016, the first initiative of its kind to specifically address C&D waste. These rules mandate local authorities to use recycled C&D materials in municipal and government contracts, establish waste management facilities, and encourage proper waste segregation at the source and its channelling to recycling facilities. However, implementation remains inconsistent across states and cities due to financial constraints, lack of technical expertise, and limited public awareness.

Conference discussions revealed that although India has over 70 recycling facilities for C&D debris, the unavailability of waste at plant sites is a concern due to transportation costs and illegal dumping. The supply chain costs of waste acquisition, transportation, and processing are significant challenges owing to the lack of stringent regulations and enforcement.



The Industry Meet featured three panel discussions covering various dimensions of C&D waste management and sustainable construction practices. Experts in the respective fields, including Dr. Shailesh K. Agrawal, ED of BMTPC; Dr. L.P. Singh, DG of NCCBM; and Dr. S.R. Karade, Chief Scientist of CSIR-CBRI, moderated these discussions, fostering insightful exchanges and idea-sharing among participants.

Estimates indicate that India's construction industry generates about 150-500 million tonnes of C&D waste annually, posing challenges such as unauthorized dumping, lack of disposal space, and environmental hazard. Rapid urbanization, booming construction activities, and subsequent demolition processes significantly contribute to this waste generation.



Additional issues include the lack of incentives and awareness about recycling techniques, unavailability of guidelines and enforcement rules, and inadequate coordination among stakeholders (C&D contractors, government engineers, architects, RMC producers, recycling plant owners, etc.). There is also a gap between policy formulation and implementation with local bodies often facing challenges due to limited funds, lack of expertise, and insufficient enforcement mechanisms. Awareness about the importance of C&D waste management and recycling is low among stakeholders, leading to illegal dumping and non-compliance with regulations.



A key suggestion from the event was the creation of a portal for accountability and awareness, where government officials and stakeholders can update information regarding C&D waste generation, utilization, techniques, and recycling plants, making it accessible to all. Proper coordination among stakeholders and increased awareness are essential for the effective collection, segregation, recycling, and utilization of C&D wastes.

Overall, the Industry Meet served as a vital platform for stakeholders to converge, exchange knowledge, and chart a path towards sustainable construction practices leveraging C&D waste effectively.

## सीबीआरआई में दिया पर्यावरण संरक्षण की महत्ता पर जोर



» मदरलैंड संवाददाता

रुड़की। सीबीआरआई रुड़की में विश्व पर्यावरण दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उत्तराखंड राज्य आपदा न्यूनीकरण प्राधिकरण के सचिव आईएस डॉ. रंजीत कुमार सिन्हा ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। सीबीआरआई के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. नीरज जैन ने सभी के साथ विश्व पर्यावरण दिवस से संबंधित जानकारी साझा की तथा कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की। संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप

कुमार ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बताया कि इस बार पर्यावरण दिवस की थीम, लैंड रेस्टोरेशन डिजरटिफिकेशन और ड्राफ्ट रेसिलियंस है। इसलिए जो जमीन बंजर हो गई है या जो पानी की कमी से रेगिस्तान बन रही है या सूखा पड़ रहा है उसे पुनः ठीक करने की आवश्यकता है। ताकि हम आने वाली पीढ़ियों को एक हरा-भरा प्लेनेट दे सकें। यह तभी संभव हो पाएगा जब हम पर्यावरण संरक्षण की महत्ता को समझेंगे और जलवायु परिवर्तन से होने वाले नुकसान को बचाने की दिशा में काम करेंगे। मुख्य अतिथि डॉ. रंजीत कुमार सिन्हा ने

बताया कि बच्चा जब जन्म लेता है तभी से उसे ऑक्सीजन की जरूरत पड़ती है और हम जीवन भर इस पर निर्भर रहते हैं। अतः मनुष्य का जन्म और जीवन पर्यावरण से जुड़ा है और उसे बचाने के लिए हमें पेड़ों की गुलामी भी करनी पड़े तो उसमें कोई गलत बात नहीं है। हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाकर पर्यावरण को बचाना है। इस अवसर पर सीबीआरआई ने यूएसडीएमए के साथ एक समझौता पत्र पर भी हस्ताक्षर किया। जिसके अंतर्गत दोनों सरकारी तंत्र आपदा प्रबंधन से संबंधित समस्याओं पर भविष्य में मिलकर काम करेंगे। संस्थान के पूर्व वैज्ञानिक डॉ. शांतनु सरकार ने निदेशक उत्तराखंड भूस्खलन न्यूनीकरण एवं प्रबंधन केंद्र के निदेशक के तौर पर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस दौरान संस्थान द्वारा निदेशक के नेतृत्व में करीब 200 से अधिक फलदार वृक्ष कैम्पस में लगाए गए। डॉ. आरके वर्मा ने मुख्य अतिथि का परिचय प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. सौमित्र मैती, प्रधान वैज्ञानिक ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक एसके नेगी, डॉ. हरपाल सिंह, डॉ. डीपी कानूनगो, डॉ. एसआर कराडे, डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. लीना चौरसिया, डॉ. चन्दन मीना, डॉ. नवल किशोर, मेहर सिंह, अर्पण महेश्वरी आदि उपस्थित रहे।

# सीबीआरआई में मना प्रौद्योगिकी दिवस, तकनीक पर दिया जोर स्कूली बच्चों, भावी अभियंताओं ने किया प्रयोगशालाओं का भ्रमण



» मद्रास संवाददाता

रुड़की। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में शनिवार को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया गया। संस्थान के रविंद्र नाथ टैगोर सभागार में आयोजित समारोह में आईआईटी मद्रास के प्रो. सीबीआर मूर्ति मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में मुख्य महा प्रबंधक, एनआरडीसी, कमांडर (सेनि) अमित रस्तोगी रहे। अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन कर समारोह का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. मूर्ति ने कहा कि प्रौद्योगिकी दिवस

प्रदीप कुमार ने कहा कि आज के दिन हमें यह देखना है कि पिछले वर्ष में हमने क्या पाया है। उन्होंने कहा कि देश ने हमें देश की मूलभूत आवश्यकताओं में से भवन अनुसंधान का जिम्मा दिया है। हमें अपने इस दायित्व को बेहतर ढंग से निभाना है। प्रौद्योगिकी दिवस आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. डीपी कानुनगो ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाए जाने के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर आर्मी पब्लिक स्कूल-2, मारवाड़ी कन्याशाला पाठशाला तथा क्वार्टरम यूनिवर्सिटी के 190 से अधिक छात्रों ने अपने अध्यापकों एवं प्रोफेसर्स के साथ संस्थान की प्रयोगशालाओं का भ्रमण किया तथा संस्थान द्वारा विकसित अनेक प्रौद्योगिकियों से स्वरूह हुए। समारोह में संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों के लाइसेंसधारियों का भी अभिन्दन किया गया। संस्थान के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप चौहान के संचालन में आयोजित कार्यक्रम में प्रशासनिक अधिकारी परवेश चन्द, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. पीकेएस चौहान, एसके नेगी, डॉ. चन्दन स्वयंभू मीना, डॉ. वीणा चौधरी, नवीन निशांत, हुमरा, डॉ. अचल मित्तल, डॉ.एसआर कराडे, डॉ. हरपाल सिंह, नदीम अहमद, विनीत सेनी, गायत्री, देवदास घोष, अश्वनीश कुमार, अमन कुमार, अरुण महेश्वरी, मेहर सिंह, राजेश शर्मा, हुमरा अतहर आदि उपस्थित रहे।



# लक्ष्यों पर फोकस करने का मौका देता है प्रौद्योगिकी दिवस

रुड़की, संवाददाता। सीबीआरआई में शनिवार को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस रविंद्र नाथ टैगोर सभागार में कार्यक्रम हुआ। आईआईटी मद्रास के प्रो. सीबीआर मूर्ति को मुख्य अतिथि आमंत्रित किया गया। विशिष्ट अतिथि के रूप में एनआरडीसी से सेवानिवृत्त मुख्य महाप्रबंधक कमांडर अमित रस्तोगी मौजूद रहे। मुख्य अतिथि प्रोफेसर सीबीआर मूर्ति ने कहा कि प्रौद्योगिकी दिवस हमें अपने लक्ष्यों पर फोकस करने का अवसर देता है। ताकि हम प्रौद्योगिकियों को विकसित करने पर ध्यान दें सकें। साथ ही हमें इस दिन अपनी प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करके जनमानस तक पहुंचा सकें। संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने मुख्य अतिथि का परिचय प्रस्तुत किया। विशिष्ट अतिथि कमांडर अमित रस्तोगी ने कहा कि देश के विकास में सीबीआरआई के महत्व को बहुत मानता हूँ। हमें उद्योगों की अपेक्षाओं और जरूरतों के अनुसार प्रौद्योगिकी विकसित करनी है।

# भारत के भविष्य के लिए नवाचार और उद्यमिता अहम

राज्यपाल ने कहा, नए युग की दहलीज पर खड़ा है भारत

राज्यपाल ने कहा कि भारत के सुखरूप भविष्य को अंधार देने के लिए नवाचार, तकनीक और उद्यमिता का महत्वपूर्ण योगदान है। आज भारत नए युग की दहलीज पर खड़ा है, जहां पर लोग अविश्वसनीय इतिहास और मरिनी स्पर्धा को अपनी जीतनीयता का हिस्सा बन रहे हैं। जो लोगों को अधिक क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहा है। कहा कि युवा से रस्टोअप तक को राज को समर्थन बढ़ाने के लिए युवा मंत्रिक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

जहां दूसरी ओर आईआईटी में अटोमेटिड, रॉबोट अनुसंधान और तकनीकी नवाचार को समर्थन देने की दिशा में जो चले बहते हैं वही प्रौद्योगिकी दिवस का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस दिवस को उन्नत तकनीक के माध्यम से

राज्यपाल ने कहा कि भारत के सुखरूप भविष्य को अंधार देने के लिए नवाचार, तकनीक और उद्यमिता का महत्वपूर्ण योगदान है। आज भारत नए युग की दहलीज पर खड़ा है, जहां पर लोग अविश्वसनीय इतिहास और मरिनी स्पर्धा को अपनी जीतनीयता का हिस्सा बन रहे हैं। जो लोगों को अधिक क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहा है। कहा कि युवा से रस्टोअप तक को राज को समर्थन बढ़ाने के लिए युवा मंत्रिक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

जहां दूसरी ओर आईआईटी में अटोमेटिड, रॉबोट अनुसंधान और तकनीकी नवाचार को समर्थन देने की दिशा में जो चले बहते हैं वही प्रौद्योगिकी दिवस का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस दिवस को उन्नत तकनीक के माध्यम से



# जरूरतों के अनुसार प्रौद्योगिकी विकसित करनी होगी : रस्तोगी

रुड़की। सीबीआरआई में शनिवार को आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रो. सीबीआर मूर्ति ने कहा कि प्रौद्योगिकी दिवस हमें अपने लक्ष्यों पर फोकस करने का अवसर देता है। ताकि हम प्रौद्योगिकियों को विकसित करने पर ध्यान दें सकें। साथ ही हमें इस दिन अपनी प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करके जनमानस तक पहुंचा सकें। संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने मुख्य अतिथि का परिचय प्रस्तुत किया। विशिष्ट अतिथि कमांडर अमित रस्तोगी ने कहा कि देश के विकास में सीबीआरआई के महत्व को बहुत मानता हूँ। हमें उद्योगों की अपेक्षाओं और जरूरतों के अनुसार प्रौद्योगिकी विकसित करनी है।

# सर्वे करने पहुंची रुड़की की टीम

## सिरमौर जिले में भूखलन और भूमि धंसाव को लेकर 22 स्थलों का करेगी दौरा

संवाद न्यूज एजेंसी

नाहन। वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की इलाहाबाद से मुख्य वैज्ञानिक एवं आचार्य डॉ. डीपी कानूनगी व उनकी वैज्ञानिक टीम जिला सिरमौर में एक सप्ताह के लिए पहुंची है। टीम की ओर से समस्त उपमंडलों पर चिह्नित 22 अति संवेदनशील स्थलों की प्रारंभिक अध्ययन व सर्वेक्षण कार्य किया जाना है ताकि इन स्थलों व उनके आसपास बसी हुई जन आबादी की भविष्य में सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

उपरोक्त सिरमौर, सुमित खिमटा ने बताया कि टीम की ओर से शुरूआत करते हुए उपमंडल पंचिटा साहिब, कफोटा व पच्छाद में चिह्नित स्थलों का सर्वेक्षण व प्रारंभिक अध्ययन कार्य किया गया है। बता दें कि गत वर्ष जिला सिरमौर में मानसून में विभिन्न स्थलों पर खादल फटने, भूखलन



केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की की टीम चिह्नित स्थलों का दौरा करते हुए।

और भूमि धंसाव के मामले संज्ञान में आए थे जिससे जानमाल एवं पर्यावरण को भारी नुकसान सामने आया था। जिला प्रशासन की ओर से समस्त उप-मंडलों से इस संदर्भ में जानकारी मांगी गई तथा जिसमें की समस्त उपमंडलों की ओर से लगभग 22 ऐसे भूखलन और भूमि धंसाव के

स्थलों को चिह्नित करके प्रशासन को भेजा। इसमें उपमंडल नाहन में ग्राम पंचायत नेहली भीड़ा के अंतर्गत ग्राम मलगाँव, ग्राम जरग, पंचायत, जरग, ग्राम अगड़ीवाला, ग्राम पंचायत, म्जार, ग्राम तिरमाली दरार, ग्राम पंचायत, जिड़ला, उप मंडल-पच्छाद में ग्राम पंचायत नैना टिबकर (ग्राम मलगाँव

शामलाटो) के अंतर्गत थलपा, ग्राम पंचायत नेरी नवा के अंतर्गत भ्रमण स्थल लख रोवा, ग्राम पंचायत नेरी नवा के अंतर्गत चुन्नार, उप मंडल-राजगढ़ के तहत ग्राम पंचायत शरणा के अंतर्गत शलापा के पास स्थल का निरीक्षण करेगी।

इसके अलावा ग्राम पंचायत, कोटला बंसी के अंतर्गत शलेच कांची, ग्राम पंचायत, कोठिवा शरार (ग्राम कोट-धनपौर) के अंतर्गत कोट, खैरी-ग्राम पंचायत, टिम्बर के अंतर्गत दांक, उपमंडल शिलाई के तहत ग्राम पंचायत, मिस्ताह के अंतर्गत अपने वाला स्थल गनाली, सिंदोली निकट गुमराह (सौलन-मीनस रोड) के अंतर्गत ग्राम पंचायत, अजरीली व उप मंडल-संगड़ह के तहत ग्राम पंचायत, राजा के अंतर्गत स्थल उंगरकांडी, ग्राम पंचायत, मौनल काकोम के अंतर्गत स्थल मौनल, ग्राम पंचायत, सांगना के अंतर्गत भ्रमण स्थल गट्टा मंडवाच भी टीम आएगी।



8:22

59%

हिन्दुस्तान

epaper  
हिन्दुस्तान



Share Copy Save Font D'load Image Text Listen  
url Size Image



रुड़की सीबीआरआई में शनिवार को स्वास्थ्य शिविर का उद्घाटन करते अतिथि।

## सीबीआरआई में स्वास्थ्य परीक्षण कैंप

रुड़की। सीबीआरआई में चार दिवसीय स्वास्थ्य परीक्षण कैंप का शनिवार को समापन हो गया। फिनोम इंडिया- सीएसआईआर हेल्थ कोहोर्ट नॉलेजबेस प्रोजेक्ट के अन्तर्गत इसका आयोजन किया गया था। कैंप का उद्घाटन मुख्य वैज्ञानिक एसके नेगी ने किया। स्वास्थ्य परीक्षण के अंतर्गत बॉडी कम्पोजिशन एनालिसिस, ब्लड प्रेशर, ब्लड केमिस्ट्री, लिवर फाइब्रो स्कैन, ईसीजी की गई।

from Jaunpur

Neha Shukla  
@timesgroup.com

**Lucknow:** Bahujan Samaj Party is all set to add more spice to the electoral battle in Jaunpur by fielding local strongman and former MP Dhananjay Singh's wife Shrikala from the seat. Earlier, Samajwadi Party had fielded former minister and NRHM scam accused Babu Singh Kushwaha to race BJP's Kripshankar Singh, who was a minister in Congress-led Maharashtra govt.



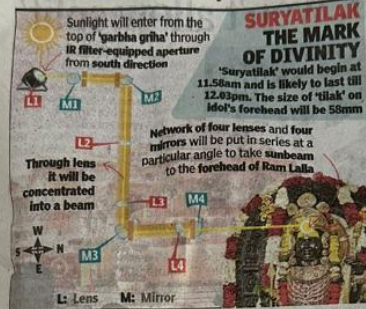
Shrikala is the chairperson of Jaunpur zila panchayat.

Kushwaha was a confidante of BSP chief Mayawati before he was arrested for his role in the NRHM scam in 2012.

While Shrikala's candidature is yet to be officially announced, reliable sources told TOI that she had been given the nod by the top party leadership. A picture in which she is standing in front of BSP state headquarters in Lucknow went viral on Monday. Shrikala Reddy, as she was known before marriage, comes from an industrialist family from the South. At present, she is the chairperson of Jaunpur zila panchayat from Apna Dal (S), an alliance partner of the BJP. It was Dhananjay Singh who was planning to contest elections from Jaunpur till he was convicted in a case related to abduction and is now serving a seven-year term. Political analysts say that Shrikala's candidature may split the Rajput vote in the constituency and make it a keen triangular contest. Dhananjay Singh has been a former BSP MP from Jaunpur.

**Amal Lari is BSP pick**

## No electronic device or battery used in Ram's 'Suryatilak'



Continued from P 1

The decision would protect the deity from exposure to unwanted heat and irritation.

While muhurta to celebrate the birth of Ram Lalla has been fixed at 12pm and 40 seconds on April 17, the 'Suryatilak' would begin at 11.58am and is expected to last till 12.03 pm.

On Monday, trials were conducted yet again at the Ram temple. The size of the tilak on the forehead of the idol

### TRIALS CONDUCTED AT RAM TEMPLE

would be 58 millimetres.

Bengaluru-based Indian Institute of Astrophysics and private company Optics & Allied Engg (Optica) have collaborated on the project with the group of scientists from CBRI.

Led by Dr SK Panigarhi from CBRI, Dr RS Bisht, professor R Pradeep Kumar among other experts worked on the project. The team from CBRI arrived in Ayodhya ear-

ly on Monday and would remain stationed here till April 17 evening.

The opto-mechanical system would provide the best results during the 'Suryatilak' for a period of 3.5 minutes at the centre of the lord's forehead, while post that, concentrated light would start fading a bit.

Comprising four mirrors and four lenses that have been adjusted inside the brass pipes, black powder has been coated on the inner surface of the pipes, elbows and joints to avoid scattering of the sunlight.

Facing the south direction, the first tilt mechanism placed over the slab on the first floor would divert the sun rays towards the north before being deflected towards the ground floor of the sanctum sanctorum.

Forehead of Ram Lalla faces the east direction. No battery or electronic device has been used in the entire system and it could be operated manually with slight adjustments year after year to organise 'Suryatilak' of the lord on Ram Navami.

## Be alert for Ram Navami: DGP to cops

TIMES NEWS NETWORK

**Lucknow:** Director general of police (DGP) Prashant Kumar has issued comprehensive guidelines to ensure effective police management and traffic arrangements for the upcoming Chaitra Ram Navami celebrations.

The directives aim to maintain peace and order during the festivities and are addressed to all zonal additional director generals of police, police commissioners, inspector generals of police, deputy inspectors general of police and senior superintendents of police across the state. Kumar said that following a review of past festival records, any existing or historical problems should be promptly addressed. Designated police officers with magistrates are in-



An artist giving final touch to an idol of Lord Ram.

structed to visit problematic areas and resolve issues. "All gazetted officers are mandated to visit sensitive locations, including temples, fairgrounds and procession routes and make necessary arrangements. Vigilance against mischievous elements is emphasised, with a focus on preventive actions," he said.

He said riot control plans must be rehearsed and anti-sabotage checks are to be conducted at key fairgrounds and temple entrances, with men and women police personnel briefed and assigned duties. Firefighting equipment and vehicles must be available and CCTV cameras, videography teams and drones should be deployed as needed.

# All set for 'Surya tilak' of Ram Lalla in Ayodhya on Ram Navami

[Arunav Sinha](#)

16 April, 2024 08:15 pm IST



Follow Us :  

Lucknow, Apr 16 (PTI) At noon on Ram Navami Wednesday, the Sun's rays will fall on the forehead of Ram Lalla in Ayodhya, a 'Surya tilak' of the deity made possible by an elaborate mechanism involving mirrors and lenses.

This would be the first Ram Navami since the consecration of the Ram idol at the new temple, inaugurated by Prime Minister Narendra Modi on January 22. The system was tested by the scientists on Tuesday.

"The basic objective of the Surya Tilak project is to focus a 'tilak' on the forehead of Shri Ram idol on every Shri Ram Navami day. Under the project, sunlight will be brought on the forehead of Lord Ram at noon on Shri Ram Navami in the Chaitra month every year," Dr S K Panigrahi, scientist at CSIR-CBRI Roorkee, who was associated with the project told PTI.

Elaborating further, Panigrahi said, "The position of the Sun changes every year on the day of Shri Ram Navami. Detailed calculations show that the date of Shri Ram Navami repeats every 19 years." According to a senior scientist of Council of Scientific and Industrial Research (CSIR)-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, the planned tilak size is 58 mm. The exact period of tilak on the forehead centre is about three to three-and-a-half minutes, with two minutes of full illumination, he said.

Meanwhile, a member of Shri Ram Janmabhoomi Teerth Kshetra Trust, Anil Mishra, told PTI, “During the Surya tilak, devotees will be allowed inside the Ram temple. Around 100 LEDs are being put up by the temple trust, and 50 by the government, which will show the Ram Navami celebrations. People will be able to see the celebrations from where they are present.” Sharing his personal experience in installing this unique mechanism, Dr D P Kanungo, chief scientist at CSIR-CBRI, Roorkee said, “Actually this is meticulously planned, designed and implemented to achieve utmost accuracy.” This will be a testament to our scientific acumen and indigenous technological development to showcase before our countrymen who have all the faith in and support to our scientific community, he said.

Asked what will happen to Surya tilak in case of a cloudy sky, Kanungo said, “That’s the limitation. We don’t wish to do with artificial light because of the faith and belief of our people.” In consultation with the Indian Institute of Astrophysics (IIA), Bangalore, the CSIR-CBRI, Roorkee team has developed a mechanism for a 19-year period to steer the sunlight from the third floor of the temple to the ‘garbhagriha’.

The detailed complete design to bring the sunlight to the garbhagriha is developed by CBRI, with the IIA providing consultancy for the optical design.

The fabrication of optical elements, pipes, tilt mechanism and other related components are carried out by Optics and Allied Engg Pvt Ltd (Optica), a Bangalore-based company.

Before implementing the opto-mechanical system in the Ram temple for Surya tilak, a scaled down model suitable for the Roorkee locality has been successfully validated. A full scale model has been successfully validated at Optica site at Bangalore in March 2024.

The CSIR-CBRI, Roorkee team along with IIA Bangalore and Optica Bangalore completed the installation in the first week of April, and repeated trials have been done, Panigrahi said.

Meanwhile, explaining the opto-mechanical system for Surya tilak, Panigrahi said, “The opto-mechanical system consists of four mirrors and four lenses fitted inside the tilt mechanism and piping systems. The complete cover with aperture for the tilt mechanism is placed at the top floor to divert the Sun rays through mirrors and lenses to the garbhagriha.” “The final lens and mirror focus the Sun rays to the forehead of Shri Ram facing towards the east. The tilt mechanism is used to adjust the first mirror tilting for sending the Sun rays towards the north direction to the second mirror for making the Surya tilak every year on Shri Ram Navami day,” he said.

“All the piping and other parts are manufactured using the brass material. The mirrors and lenses which are used are of very high quality and durable to sustain for a long period.

“The inner surface of pipes, elbows and enclosures are black powder coated to avoid scattering of sunlight. Also at the top aperture, IR (infra red) filter glass is used to restrict the Sun heat wave to fall on the forehead of the idol,” Panigrahi said.

He said the team from CSIR-CBRI Roorkee includes Dr S K Panigrahi, Dr R S Bisht, Kanti Solanki, V Chakradhar, Dinesh and Sameer. Prof R Pradeep Kumar (Director, CSIR-CBRI) mentored the project.

From IIA Bangalore side, Dr Anna Purni S (Director IIA), Er S Sriram and Professor Tushar Prabhu are the consultants. Rajinder Kotaria, managing director, Optica, and his team Nagraj, Vivek, Thava Kumar were actively involved in fabrication and installation part. PTI NAV KSS KSS

## All set for 'Surya tilak' of Ram Lalla in Ayodhya on Ram Navami

*PTI Updated: April 16, 2024 20:11 IST*

Lucknow, Apr 16 (PTI) At noon on Ram Navami Wednesday, the Sun's rays will fall on the forehead of Ram Lalla in Ayodhya, a 'Surya tilak' of the deity made possible by an elaborate mechanism involving mirrors and lenses.

This would be the first Ram Navami since the consecration of the Ram idol at the new temple, inaugurated by Prime Minister Narendra Modi on January 22. The system was tested by the scientists on Tuesday.

"The basic objective of the Surya Tilak project is to focus a 'tilak' on the forehead of Shri Ram idol on every Shri Ram Navami day. Under the project, sunlight will be brought on the forehead of Lord Ram at noon on Shri Ram Navami in the Chaitra month every year," Dr S K Panigrahi, scientist at CSIR-CBRI Roorkee, who was associated with the project told PTI.

Elaborating further, Panigrahi said, "The position of the Sun changes every year on the day of Shri Ram Navami. Detailed calculations show that the date of Shri Ram Navami repeats every 19 years."

According to a senior scientist of Council of Scientific and Industrial Research (CSIR)-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, the planned tilak size is 58 mm. The exact period of tilak on the forehead centre is about three to three-and-a-half minutes, with two minutes of full illumination, he said.

Meanwhile, a member of Shri Ram Janmabhoomi Teerth Kshetra Trust, Anil Mishra, told PTI, "During the Surya tilak, devotees will be allowed inside the Ram temple. Around 100 LEDs are being put up by the temple trust, and 50 by the government, which will show the Ram Navami celebrations. People will be able to see the celebrations from where they are present."

Sharing his personal experience in installing this unique mechanism, Dr D P Kanungo, chief scientist at CSIR-CBRI, Roorkee said, "Actually this is meticulously planned, designed and implemented to achieve utmost accuracy."

This will be a testament to our scientific acumen and indigenous technological development to showcase before our countrymen who have all the faith in and support to our scientific community, he said. Asked what will happen to Surya tilak in case of a cloudy sky, Kanungo said, "That's the limitation. We don't wish to do with artificial light because of the faith and belief of our people."

In consultation with the Indian Institute of Astrophysics (IIA), Bangalore, the CSIR-CBRI, Roorkee team has developed a mechanism for a 19-year period to steer the sunlight from the third floor of the temple to the 'garbhagriha'.

The detailed complete design to bring the sunlight to the garbhagriha is developed by CBRI, with the IIA providing consultancy for the optical design. The fabrication of optical elements, pipes, tilt mechanism and other related components are carried out by Optics and Allied Engg Pvt Ltd (Optica), a Bangalore-based company.

Before implementing the opto-mechanical system in the Ram temple for Surya tilak, a scaled down model suitable for the Roorkee locality has been successfully validated. A full scale model has been successfully validated at Optica site at Bangalore in March 2024.

The CSIR-CBRI, Roorkee team along with IIA Bangalore and Optica Bangalore completed the installation in the first week of April, and repeated trials have been done, Panigrahi said. Meanwhile, explaining the opto-mechanical system for Surya tilak, Panigrahi said, "The opto-mechanical system consists of four mirrors and four lenses fitted inside the tilt mechanism and piping systems. The complete cover with aperture for the tilt mechanism is placed at the top floor to divert the Sun rays through mirrors and lenses to the garbhagriha." "The final lens and mirror focus the Sun rays to the forehead of Shri Ram facing towards the east. The tilt mechanism is used to adjust the first mirror tilting for sending the Sun rays towards the north direction to the second mirror for making the Surya tilak every year on Shri Ram Navami day," he said.

"All the piping and other parts are manufactured using the brass material. The mirrors and lenses which are used

are of very high quality and durable to sustain for a long period. "The inner surface of pipes, elbows and enclosures are black powder coated to avoid scattering of sunlight. Also at the top aperture, IR (infra red) filter glass is used to restrict the Sun heat wave to fall on the forehead of the idol," Panigrahi said. He said the team from CSIR-CBRI Roorkee includes Dr S K Panigrahi, Dr R S Bisht, Kanti Solanki, V Chakradhar, Dinesh and Sameer. Prof R Pradeep Kumar (Director, CSIR-CBRI) mentored the project.

From IIA Bangalore side, Dr Anna Purni S (Director IIA), Er S Sriram and Professor TusharPrabhu are the consultants. RajinderKotaria, managing director, Optica, and his team Nagraj, Vivek, Thava Kumar were actively involved in fabrication and installation part.

# भूकंप के मद्देनजर घर बनाने के तरीके बताए

नाहन में केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के विशेषज्ञों ने दी उपयोगी जानकारी, संभावित आपदा पर दिए टिप्स

दिव्य हिमाचल व्यू - नाहन

जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण सिरमौर द्वारा मंगलवार को नाहन में संभावित आपदा के दृष्टिगत भवनों की रिपेयर और रेट्रोफिटिंग पर एक दिवसीय जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। अतिरिक्त जिला दंडाधिकारी एलआर वर्मा ने इस कार्यशाला की अध्यक्षता बतौर मुख्यातिथि की। एलआर वर्मा ने इस अवसर पर कहा कि केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में चलाए जा रहे इस एक दिवसीय कार्यशाला से सिरमौर जिला में विस्तृत संभावित



आपदा के दृष्टिगत नए भवनों के निर्माण और पुराने भवनों की रेट्रोफिटिंग पर अच्छी और मूल्यवान जानकारी साझा की गई है। एलआर वर्मा ने कहा कि हिमाचल आज भी चार अप्रैल, 1905 को कांगड़ा में आया भूकंप नहीं भूला है, जिसमें करीब 20 हजार लोगों की जानें गई थी। इसके साथ ही लगभग 50 हजार मवेशी तथा एक लाख से अधिक घर पूरी तरह से नष्ट हो गए थे तथा लाखों

रुपए का नुकसान आंका गया था। उन्होंने कहा कि आज के संदर्भ में यदि बात करें तो जानमाल के नुकसान का वह आंकड़ा लाखों में हो सकता है। एलआर वर्मा ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की से आए विशेषज्ञों का सिरमौर पधारने पर आभार जताया और आशा जताई कि उनके मार्गदर्शन में जिला में विभिन्न विभागों में इंजीनियरिंग के क्षेत्र में कार्यरत तकनीकी अधिकारियों को इस कार्यशाला से लाभ मिलेगा। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से इस कार्यशाला का लाभ उठाने का आग्रह किया तथा सभी से इस

बहुमूल्य जानकारी को अपने सहयोगियों एवं विभाग के विशेषज्ञों के साथ भी साझा करने का आग्रह किया। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के विशेषज्ञ आर्किटेक्ट एसके नेगी, डा. अजय चौरसिया, आशीष कपूर ने आपदा के दृष्टिगत नए भवनों की निर्माण प्रक्रिया के विभिन्न तकनीकी स्तरों जैसे प्लान, मैटीरियल आदि के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। उन्होंने पुराने भवनों की रिपेयर और रेट्रोफिटिंग के बारे में भी विस्तार से बताया। इसके साथ ही उन्होंने भूकंप के दृष्टिगत जिला में विस्तृत

परियोजना रिपोर्ट बनाने के संबंध में भी तकनीकी ज्ञान प्रतिभागियों को प्रदान किया, ताकि एक अच्छी एवं प्रभावशाली विस्तृत परियोजना रिपोर्ट जिला में तैयार की जा सके। जिला राजस्व अधिकारी चेतन चौहान ने कार्यशाला का संचालन करते हुए विभिन्न विषयों पर जानकारी प्रदान की। कार्यशाला में आपदा प्रबंधन, लोक निर्माण, जल शक्ति विभाग, नगर एवं ग्राम योजनाकार, विद्युत विभाग, स्वास्थ्य, हिमुडा, ग्रामीण विकास, शहरी निकाय, पंचायती राज विभागीय अधिकारियों ने भाग लिया। जानकारी हासिल की।

## नए भवनों की निर्माण प्रक्रिया के बारे में दी विस्तृत जानकारी

नाहन में भवनों की मरम्मत और निर्माण तकनीक पर हुई कार्यशाला



नाहन में जिला स्तरीय कार्यशाला की अध्यक्षता करते अतिरिक्त जिला दंडाधिकारी एलआर वर्मा। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

नाहन। जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण सिरमौर ने मंगलवार को नाहन में संभावित आपदा के दृष्टिगत भवनों की मरम्मत और निर्माण तकनीक पर एक दिवसीय जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया।

इसकी अध्यक्षता बतौर मुख्यातिथि अतिरिक्त जिला दंडाधिकारी एलआर वर्मा ने की।

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में चलाई जा रही इस कार्यशाला से जिले में विस्तृत संभावित आपदा के दृष्टिगत नए भवनों के निर्माण और

### केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की से आए विशेषज्ञ हुए शामिल

पुराने भवनों की मरम्मत पर अच्छी और मूल्यवान जानकारी साझा की गई।

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के विशेषज्ञ आर्किटेक्ट एसके नेगी, डा. अजय चौरसिया, आशीष कपूर ने आपदा के दृष्टिगत नए भवनों की निर्माण प्रक्रिया के विभिन्न तकनीकी स्तरों जैसे प्लान, सामग्री आदि के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की।

उन्होंने पुराने भवनों की मरम्मत और निर्माण तकनीक के बारे में भी

विस्तार से बताया। इसके साथ ही उन्होंने भूकंप के दृष्टिगत जिले में विस्तृत परियोजना रिपोर्ट बनाने के संबंध में भी तकनीकी ज्ञान प्रतिभागियों को प्रदान किया ताकि एक अच्छी एवं प्रभावशाली विस्तृत परियोजना रिपोर्ट जिले में तैयार की जा सके।

जिला राजस्व अधिकारी चेतन चौहान ने कार्यशाला का संचालन करते हुए विभिन्न विषयों पर जानकारी प्रदान की। इस मौके पर आपदा प्रबंधन, लोक निर्माण, जल शक्ति विभाग, नगर एवं ग्राम योजनाकार, विद्युत विभाग समेत अन्य विभागों के अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।